चन्दामामा
नवम्बर १९७६
Rs 1·25

Results of Chandamama-Camlin Colouring Contest No. 3 (Hindi)

1st Prize : Rekha Agarwal, Modinagar. *2nd Prize* : Sunil Mutiyeja, Modinagar. *3rd Prize* : Sangeeta Mallah, Bombay. *4th Prize* : Satish Kumar Sharma, Varanasi. Sunil Sinh Jansat, Varanasi . Harisinh, Bombay. Sanjeevkumar Agarwal, Roorkee. Vajender Pal Singh Madan, Kanpur. *Merit Certificates* : Aroopkumar Sasmal, Bhubaneswar. Sunita Jain, Khatauli. Sunita Patel, Bhilainagar. Neeraj Sharma, Jammu. Sunil Dutt Sharma, Meerut. Sushil Kumar Wadhwa, New Delhi. Dinesh Kumar Garg, Delhi Rizwan Ahmed Khan, Hyderabad. Ved Parkash Bhatia, New Delhi. Dinesh Kumar Sharma, Moradabad.

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए ५०० मजेदार पुरस्कार!
इसके अलावा भी अन्य शानदार पुरस्कार
जीतने का सुअवसर!
खाली जगह की संख्या बताओ
2 11
2 12
1 32
2 22
5 21
3 22
1 ?7
2 42
Cadbury's MILK CHOCOLATE GEMS
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कैडबरिज जेम्स के एक खाली प्लास्टिक पैकेट के साथ भेजो। पहले ५०० सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा। अतः तुम्हे अपने गिफ्ट चेक पर ४०० रुपये का एक और शानदार इनाम जीतने का मौका मिलेगा— भाग्यशाली लोगों के लिए अतिरिक्त लाभ!
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"लूटो जेम्स का मजा" डिपार्टमेंट २०-E
पोस्ट बॉक्स नं. ४६, थाने ४००६०१
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि:
16-12-1976
चॉकलेट से भरे रंगीन कैडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-39 HN

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस अंक से 'चन्दामामा' में थोड़े से परिवर्तन किये जा रहे हैं। पूर्व सूचना के अनुसार चन्दामामा का मूल्य रु. १-२५ निर्द्धारित कर दिया गया है। इसके साथ 'चन्दामामा' के चार पृष्ठ बढ़ा दिये गये हैं।

इस अंक से फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता का पारितोषिक २५ रु. कर दिया गया है और साथ ही 'कहानी-शीर्षक-प्रतियोगिता' का प्रारंभ किया जा रहा है। आशा है कि ये परिवर्तन पाठकों में अधिक अभिरुचि पैदा करेंगे।

वर्ष : २९ नवम्बर १९७६ अंक : ३

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जनवरी १९७७ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

P. V. Subramanyam

Sambhu Mukherjee

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ नवम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

नवम्बर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो: फसल पक गई, घर ले जाऊँ!

द्वितीय फोटो: बिक गया माल, मैं भी जाऊँ!!

भेजनेवाले: **कृष्ण कुमार शाह**

सी ४/२१ सराय गोवर्धन, चेतगंज, वाराणसी-२२१००१

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

अ प्युपायै स्त्रिभि, स्तात
योर्थः प्राप्तुम् न शक्यते,
तस्य विक्रम कालाम् स्ता
न्युक्ता नाहु मंनीषिण: ॥ १ ॥

[वत्स, पंडितों का कहना है कि जो कार्य साम, दाम व भेदोपायों से संभव न होगा, उसके लिए दण्डोपाय का प्रयोग करना है।]

प्रमत्ते, ष्यभियुक्तेषु,
दैवेन प्रहृतेषु च,
विक्रमा, स्तात्त, सिध्यंति
परीक्ष विधिना कृता:   ॥ २ ॥

[ठगाये गये लोग, असहाय तथा जिनके प्रति ईश्वर अनुकूल नहीं होते, उनके प्रति दण्डोपाय का प्रयोग करने पर प्रयोजन हो सकता है।]

अप्रमत्तम्, कथम् तंतु
विजिगीषुम्, बले स्थितम्
जितरोषम्, दुराधर्षम्
प्रधर्षयितु मिच्छथ   ॥ ३ ॥

[अप्रमत्त, विजिगीष, बलवान, तथा रोष पर विजय करनेवाले, जिसका सामना न किया जा सके, ऐसे व्यक्तियों का सामना करने की सोचना कैसा है?]

मित्र-संप्राप्ति

[४०]

विनयवती ने उस घने अंधकार में दैवाधीनम को नहीं पहचाना और गांधर्व विधि से उसके साथ विवाह कर लिया।

विवाह-संस्कार के समाप्त होने पर विनयवती ने प्रेमपूर्वक पूछा–"प्रियतम, इस शुभ समय में आप मौन क्यों हैं?"

"भाग्य का निर्णय बदला नहीं जा सकता।" दैवाधीनम ने उत्तर दिया।

ये शब्द सुनकर विनयवती चकित रह गई। उसने सोचा–"जल्दबाजी में करनेवाले व्यवहार का फल ऐसा ही होता है।" तब रोकर दैवाधीनम को भगा दिया।

राजभट के घर से निकाला जाकर दैवाधीनम चलता गया। रास्ते में एक बड़ा जुलूस देख उसमें मिल गया और लोगों के साथ चलने लगा। वह जुलूस इसलिए निकाला जा रहा था कि दूसरे नगर का वरकीर्ति नामक एक बड़ा व्यापारी हाथी पर सवार हो विवाह करने के लिए वधू के घर जुलूस के साथ जा रहा था।

मुहूर्त का समय निकट आया। विवाह के मण्डप में वधू वेदी पर बैठी थी। वह अप्सरा जैसी सुंदर थी। वरकीर्ति हाथी से उतर पड़ा, विवाह मण्डप में प्रवेश कर ही रहा था, तभी हाथी बिगड़ उठा, महावत को मारकर विवाह मण्डप के भीतर घुस गया। इसे देख डर के मारे वधू को अकेली छोड़ वर के साथ सभी लोग मण्डप से भाग गये।

दैवाधीनम ने वधू की आँखों में घबराहट देखी, उसके निकट जाकर उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर सांत्वना दी–"तुम

अंतिम पृष्ठ का चित्र

डरो मत, तुम्हारे प्राणों के लिए कोई खतरा न होगा। मैं तुम्हें बचाऊँगा।"

वधू डर के मारे दैवाधीनम से लिपट गई। उसी क्षण उस युवती ने दैवाधीनम को प्यार किया। दैवाधीनम के साहस को देख हाथी चकित हो खड़ा ही रह गया। इस पर उसने हाथी को ललकारकर विवाह मण्डप से भगा दिया।

थोड़ी देर बाद वरकीर्ति अपने बंधु-बांधओं के साथ मण्डप में लौटा। उसने देखा कि वधू का हाथ दूसरे युवक के हाथ में है। उसने वधू के पिता से पूछा—"मेरे साथ विवाह पक्का करके तुमने इस कन्या को दूसरे के हाथ क्यों सौंप दिया?"

"मैं भी सब लोगों की भांति डरकर भाग गया। इसलिए मैं कुछ नहीं जानता कि यह सब क्या हो रहा है।" कन्या के पिता ने कहा।

इसके बाद उसने अपनी कन्या की ओर मुड़कर कहा—"बेटी! तुम्हारा यह व्यवहार ठीक नहीं है। तुम्हें तो वरकीर्ति के साथ विवाह करना था, तुमने इसके हाथ को क्यों पकड़ा?"

"इस युवक ने मेरे प्राण बचाये। मेरे शरीर में प्राण के रहते मैं दूसरे के साथ विवाह नहीं कर सकती।" युवती ने स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया।

वधू के मुंह से ये बातें सुनने पर वर तथा वधू पक्ष के लोगों के बीच रात भर झगड़ा होता रहा।

इस झगड़े का समाचार सारे नगर में फैल गया। जब यह समाचार राजकुमारी चन्द्रमति तथा राजभट की पुत्री विनयवती को मालूम हुआ कि इसमें दैवाधीनम का हाथ है, तो वे दोनों कुतूहलवश वहाँ पर आ पहुँचीं।

झगड़ा जोर पकड़ने लगा। वरकीर्ति एक दूसरे देश का करोड़पति था। इसलिए झगड़े का फ़ैसला करने राजा स्वयं आ पहुँचा। राजा ने दैवाधीनम से पूछा—"इस झगड़े का असली कारण क्या है?"

दैवाधीनम ने राजकुमारी चन्द्रमति, राजभट की पुत्री विनयवती तथा व्यापारी की पुत्री की ओर सार्थक दृष्टि प्रसारित कर कहा–"भाग्य का निर्णय प्रबल होता है, वह तो होकर ही रहेगा।" उसकी इस दृष्टि का मतलब था कि तुम लोग मेरा समर्थन करो।

राजकुमारी ने अपनी घटना याद करके कहा–"उस निर्णय को ईश्वर भी बदल नहीं सकते!"

इसके बाद दैवाधीनम ने रामभट की पुत्री की ओर देखा। उसने कहा–"इसीलिए जो घटना हुई उस पर न मैं खुश हूँ और न दुखी ही।"

इस पर व्यापारी की पुत्री ने अपने अनुभव का ख्याल करके कहा–"मेरे लिए जो निर्णय हुआ है, वह भी बदल नहीं सकता।"

चारों लोगों की बातें सुन वहाँ पर उपस्थित लोग पशोपेश में पड़ गये। तब राजा ने दैवाधीनम तथा बाक़ी तीनों युवतियों को अभय प्रदान करके कहा–"तुम लोग सच सच बता दो।"

सबने आप बीती बताई। इस पर राजा ने दैवाधीनम को लक्ष्य करके कहा–"लगता है कि तुम्हारा भाग्य प्रबल है। साथ ही तुम साहस और समयस्फूर्ति भी रखते हो। मेरे तो कोई पुत्र नहीं हैं। इसलिए तुम मेरी पुत्री के साथ विवाह करके मेरे राज्य का वारिस बन जाओ। तुम्हारे विवाह के होते ही एक हज़ार गाँव तुम्हारे नाम लिख दूंगा और तुम को युवराज बना दूंगा। परंतु इस हालत को देखते हुए तुम्हें राजभट की पुत्री तथा व्यापारी की पुत्री के साथ भी विवाह करना होगा। इसके लिए मैं अनुमति प्रदान कर रहा हूँ।"

वह भाग्यवान युवक दैवाधीनम तीनों कन्याओं के साथ विवाह करके सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगा। उसके माता-पिता और रिश्तेदार भी दैवाधीनम की सामर्थ्य पर प्रसन्न हुए और उसके साथ समझौता करके उसी के साथ रहने लगे।

माया सरोवर

[१०]

[चरकाचारी के निकट आये मगर-मच्छ की आकृतिवाले को बड़ी कुशलता पूर्वक बन्दी बनाकर उसकी सवारी पर जयशील और सिद्ध साधक जा बैठे और हिरण्यपुर की ओर चल पड़े। रास्ते में एक पेड़ पर बैठे बहेलिये भीमदास ने मकर केतु पर बाण चलाया। जलग्रह ने पेड़ को जड़ के साथ उखाड़ा। तब...]

बहेलिया भीमदास जान के डर से चिल्लाते हुए पेड़ पर से नीचे गिर पड़ा। जयशील ने मकर केतु का कंधा पकड़कर झकझोरते हुए कहा–"अरे मगर-मच्छ की खोलवाले दुष्ट! तुमने बिना मेरी अनुमति के पेड़ को उखाड़ने के लिए जलग्रह को क्यों भड़काया?"

मकर केतु ने अपने बायें कंधे में धंसे तीर की ओर देख पीड़ा के मारे कराहते हुए कहा–"जयशील! मैं अगर उस बहेलिये को इस तरह नीचे न गिरा देता तो वह दूसरा बाण चलाकर मेरे प्राण ले लेता! आप ही बताइये, क्या वह ऐसा न करता?"

जयशील ने मकर केतु की बातों की सचाई को भाँप लिया, मगर मकर केतु ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया था, इस पर उसे बड़ा क्रोध आया। इस बीच

गरुड़ नीचे उतर आता है। मकर केतु मेरे तीर की चोट खाकर भी इस शैतान हाथी पर ज्यों का त्यों बैठा हुआ है, इसे देख मैं अपमान का अनुभव करता हूँ। इस बार मेरा बाण उसके कलेजे में धंसने जा रहा है। आप लोग अभी देख लेंगे।" इन शब्दों के साथ वह जोश में आकर धनुष पर तीर चढ़ाने लगा।

सिद्ध साधक ने झट से उसका हाथ पकड़ लिया। जलग्रह पर स्थित जयशील से कहा–"जयशील, क्या हम बहेलिये भीमदास को मकर केतु का कलेजा छेदने की अनुमति दें?"

यह सवाल सुनते ही जयशील जलग्रह पर से नीचे कूद पड़ा, बहेलिये की गर्दन पकड़कर डांटने लगा–"अरे दुष्ट! हाथी पर मुझे बैठा देखकर भी तुम तीर चला देने की हिम्मत करते हो? क्या तुम्हें इस बात का संदेह तक न हुआ कि निशाना चूक जाने पर वह मेरी जान ले सकता है? तुम्हारी दृष्टता का फल भोगो।"

"साहब! मेरा निशाना अचूक होता है! आप चाहेंगे तो मैं इस तरह निशाना लगाकर बाण चलाऊँगा जिससे मेरा बाण मकर केतु की भौहों के बीच जा लगे।" इन शब्दों के साथ बहेलिये ने धनुष और बाण उठाये।

सिद्ध साधक जलग्रह के ऊपर से नीचे कूद पड़ा, पेड़ की शाखाओं में फंसकर बाहर निकलने को छटपटानेवाले बहेलिये भीमदास को बाहर खींचा।

"अरे कमबख्त बहेलिये के बच्चे! तुम पहले यह तो देख लो कि कहीं तुम्हारे हाथ-पैर टूट तो नहीं गये हैं?" सिद्ध साधक ने बहेलिये की ओर करुण दृष्टि प्रसारित कर पूछा।

बहेलिया भीमदास उत्साह में आकर उछल पड़ा और अपने हाथ पैरों को झटकाकर बोला–"भूतनाथ साहब! मुझे तो कोई चोट नहीं आई है। मैं इस तरह पेड़ पर से शनै शनै नीचे झुक गया जैसे

जयशील ने दूसरे ही क्षण उसके हाथ से धनुष और बाण खींच लिये और उन्हें दूर फेंककर बोला–"इस वक़्त मकर केतु मेरे अधीन में है। मैं उसे राजा के पास ले जा रहा हूँ। तुम उसे किसी भी प्रकार की हानि पहुँचा दोगे तो मैं तुम्हें प्राणों के साथ न छोड़ूंगा।"

"तो साहब मेरे जंगली मुर्गे की बात क्या होगी? इसने चुरा लिया जो है! उसे लौटाने को कहिये!" बहेलिये ने गुस्से में आकर पूछा।

"अबे, बकवास बंद करो। मुर्गे की बात तुम राजा से कह दो।" बहेलिये का कंधा पकड़कर झकझोरते हुए सिद्ध साधक बोला।

उसी समय वहाँ पर चरकाचारी तथा वीरनारायण आ पहुंचे। चरकाचारी मकर केतु को जलग्रह पर देख विस्मय में आ गया और बोला–"यह क्या? इसकी बगल में तलवार धंस गई थी और अब कंधे में बाण भी चुभ गया है? आश्चर्य की बात यह है कि यह अब तक जिंदा है। फिर भी इसके दिन अच्छे मालूम नहीं होते!"

"छी: इन कमबख़्त मानवों के द्वारा अपमानित हो, मार खाकर जीने की अपेक्षा मर जाना कहीं उत्तम है। मैं अभी इन लोगों को इसका मजा चखता हूँ। ये लोग मुझे समझते ही क्या हैं? मेरा शूल कहाँ पर है?" इन शब्दों के साथ वह जलग्रह पर ढूंढ़ने लगा।

सिद्ध साधक अपने हाथ का शूल ऊपर उठाकर बोला–"अबे मकर केतु! लगता है कि तुम्हारी रही-सही बुद्धि भी चरने गई है। उस शूल को मैंने कभी का ले लिया था न?"

मकर केतु सिद्ध साधक की बातें सुन घबरा गया, अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर चिल्ला उठा–"हे माया सरोवरेश्वर!" फिर बोला–"यह बताइये, आप लोग मेरे साथ क्या करने जा रहे हैं? मेरी बगल और कंधे में धंसे तलवार और तीर की बात क्या होगी?"

जयशील ने चरकाचारी को निकट बुलाकर कहा–"हम लोग क्या मकर केतु को इसी हालत में हिरण्यपुर तक ले जा सकते हैं?"

"जयशील महाराज! ऐसा करना खतरे से खाली नहीं। पहले मकर केतु की शस्त्र-चिकित्सा करके उस तलवार और बाण को निकालना होगा, अन्यथा मकर केतु की लाश ही हिरण्यपुर पहुँचेगी। आप चाहे तो वीरनारायण से पूछ सकते हैं।" चरकाचारी ने उत्तर दिया।

"चरकाचारी का कहना बिलकुल सच है। मेरी भी यही राय है कि इसे पहले हमारे गाँव में ले जाकर वहाँ पर इलाज करके एक-दो दिन के विश्राम के बाद राजा के पास ले जाना उचित होगा!" वीरनारायण ने सुझाया।

जयशील और सिद्ध साधक को भी यह सुझाव अच्छा लगा। जयशील ने सोचा कि मकर केतु को प्राणों के साथ पहले राजा के पास ले जाकर उसके द्वारा राजकुमार और राजकुमारी के अपहरण का वृत्तांत जान लिया जाय, इसके बाद राजा ही मकर केतु के संबंध में उचित निर्णय करेंगे।

इसके बाद जयशील और सिद्ध साधक जलग्रह पर सवार हो गये, तब मकर केतु से बोले–"मकर केतु! तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं। पहले तुम को हम निकट के

गाँव में ले जायेंगे, वहाँ पर तुम्हारा अच्छी तरह से इलाज करायेंगे। तुम्हारे घाव भरने के बाद ही हम लोग तुम को हिरण्यपुर ले जायेंगे।"

मकर केतु ने दोनों हाथ उठाकर कहा–"यह सब उस माया सरोवरेश्वर की दया है! लेकिन रास्ते में कोई दूसरा कमबख्त बहेलिया मेरे दायें कंधे पर बाण न चलावे, इसकी आप रक्षा कीजिए। में आप लोगों पर भरोसा करके मैं अपने प्राण आप के हाथ सौंप देता हूँ।"

"तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं। जलग्रह को आगे बढ़ाओ।" जयशील ने कहा।

जलग्रह चरकाचारी के गाँव की ओर चल पड़ा। तब जयशील सोच में पड़ गया। मकर केतु ने अब तक दो बार बड़ी भक्ति के साथ माया सरोवरेश्वर का स्मरण किया है। यह माया सरोवरेश्वर कौन है? यह सवाल मकर केतु से पूछने पर कोई फ़ायदा न होगा! वह कभी सच बोल नहीं सकता। तो फिर इसका रहस्य कैसे जान लिया जाय?

जयशील यों सोच ही रहा था कि अचानक सामने की झाड़ियों में से सीठियों तथा ढफलियों की आवाज़ सुनाई दी। जयशील सोच ही रहा था कि ये लोग कौन होंगे? तभी सबसे आगे भूतनाथ और उसके साथ ढफलियाँ तथा धनुष-बाण लिये हुए दस-बारह बहेलिये झाड़ियों की ओट में से बाहर आये।

बहेलिया भूतनाथ नाचते हुए चिल्ला उठा–"बलि चाहिए! बलि! बहेलिया वंश की महाकाली के लिए! मकर केतु का कंठ कुतरकर उसके खून से में अपने पैर रंग दूंगा। ऐसा न कर पाया तो इस दुनिया के सारे बहेलियों को खा जाऊँगा। सर्वनाश कर बैठूंगा।"

अपनी जाति के लोगों को देखते ही चरकाचारी तथा वीरनारायण के पीछे

चलनेवाला बहेलिया भीमदास चिल्ला उठा–"जय महाकाली की!" फिर सिद्ध साधक से बोला–"भूतों के सरदार साहब! हमारे गणाचारी में हमारी कुलदेवी महा काली प्रवेश कर गई हैं। कालीमाई मकर केतु का खून चाहती हैं। तुरंत आप लोग उसे हाथी पर से नीचे ढकेल दीजिए! बाद का काम हमारे गणाचारी खुद देख लेंगे।"

जयशील ने भाँप लिया कि भीमदास ने जब अपने भूतों के सरदार को देखा तब उसमें आवेश आ गया है। तब उसने वीरनारायण को इशारा किया। वीरनारायण ने तत्काल भीमदास के धनुष और बाण ज़बर्दस्ती खींच लिये। उसी वक़्त जयशील ने मकर केतु के कानों में कुछ कहा।

मकर केतु पल भर के लिए चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर चिल्ला उठा–"हे जलग्रह! इस कमबख्त जंगली को अपनी सूंड में लपेटकर ऊपर उठा दो।"

जलग्रह बिजली की तेजी के साथ आगे बढ़ा और बहेलिया भीमदास की कमर पकड़कर अपनी सूंड से ऊपर उठाया। भीमदास भय कंपित हो हाथ-पैर मारते चीखने लगा।

"मकर केतु, अब तुम जलग्रह को उन बहेलियों की ओर बढ़ाओ। तुम्हारे प्राणों के लिए कोई खतरा न होगा! वे लोग हमारी बात न मानेंगे तो मैं और सिद्ध साधक उनका अंत कर डालेंगे।" यों समझाकर जयशील भीमदास से बोला–"अरे भीमदास! तुम अपनी जाति के लोगों को समझा दो कि वे लोग चुपचाप यहाँ से चले जायें! अगर उन लोगों ने हम पर बाण चलाने की धृष्टता की तो तुम उसी वक़्त जलग्रह के पैरों के नीचे कुचलकर मर जाओगे। इसके बाद तुम्हारी जाति के सभी लोगों के टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

"जयशील महाराज! आप यह क्या कह रहे हैं? बहेलिया जाति की महाकाली मकर केतु का रक्त चाहती हैं। हम इनकार करके उनके क्रोध को भड़काने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं?" भीमदास ने थर-थर काँपते हुए उत्तर दिया।

"भीमदास! तुम नाहक़ मेरे साथ तर्क-वितर्क न करो। मकर केतु राजा का बन्दी है। इसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी मुझ पर है। समझ रहे हो न?" हाथी पर से आगे झुककर भीमदास की पीठ पर तलवार की नोक टिकाकर जयशील ने कहा।

"महाराज! तलवार से मुझे मार न डालो। लगता है कि महाकाली के जबड़ों से तुम्हारी तलवार ज्यादा तेज है। आप के पैर पड़ता हूँ; मुझे बचाओ।" छटपटाते हुए भीमदास बोला।

उसी वक़्त बहेलियों का सरदार गणाचारी बाल नोचते चिल्लाते आ पहुंचा। उसके अनुचर बहेलियों ने जलग्रह पर स्थित लोगों पर अपने बाणों का निशाना लगाया।

"जयशील! हम लोग अब क्या करें? ये लोग मुझको प्राणों के साथ न छोड़ेंगे!" मकर केतु काँपते हुए पूछ बैठा।

"महाराज! हम भी यह सवाल आप से पूछ रहे हैं!" चरकाचारी और वीरनारायण जलग्रह के पीछे छिपते हुए बोले।

"भीमदास! मेरा कहना मानते हो कि नहीं?" जयशील भीमदास की पीठ पर तलवार की नोक को दबाते हुए गरज उठा। उसी वक़्त "जय महाकाल की!" चिल्लाते सिद्ध साधक ने बहेलियों के सरदार के कलेजे की ओर निशाना लगाया।

भीमदास अपने दोनों हाथ उठाकर काँपनेवाले स्वर में बोला-"अरे सरदार मामा! अबे साले! तुम लोग बाण मत चलाओ। खबरदार! सुनते हैं कि मगर-मच्छवाला राजा का आदमी है। उसको जयशील महाराज हिरण्यपुर को ले जा रहे हैं। इन लोगों के साथ छेड़-छाड़ करने का मतलब प्राणों पर आफ़त मोल लेना है; समझे!"

"मेरे पैरों में उसके रक्त का लेप करना है। तब तक मुझे शांति न मिलेगी। मैं काली माई हूँ। बहेलियों की महाकाली हूँ।" यों चिल्लाते बहेलियों का गणाचारी जलग्रह की ओर दो क़दम आगे बढ़ा।

जयशील को गणाचारी के हठ और अहंकार पर बड़ा क्रोध आया। वह जलग्रह के ऊपर से उछलकर कूद पड़ा। बिजली की भाँति जाकर गणाचारी के केश पकड़े, उसे नीचे पटककर उसके कलेजे पर तलवार टिका दी, तब पूछा-"अबे झूठ के बच्चे! अब सच बताओ, तुम में महाकाली का प्रवेश हो गया है? या ताड़ी का असर?"

"महाकाली! साहब, मैंने मान लिया है। मुझे बचाओ!" गणाचारी चिल्ला उठा।

उसके अनुचार धनुष और बाण उठाने को हुए, तभी सिद्ध साधक चिल्लाया-"जय, महाकाल की!" तब जलग्रह से नीचे कूदकर शूल उठाये बहेलियों की ओर दौड़ पड़ा।

दूसरे ही क्षण "ठहर जाओ! ठहर जाओ!" चिल्लाते हुए दस अश्वारोही भाले चमकाते आगे बढ़े और सब को घेर लिया। (और है)

बंधन मुक्ति

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल लिया और सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, कहना होगा कि तुम्हारा जन्म राजवंश में ग़लती से हुआ है। तुम्हारे जैसा स्थिर चित्त अकसर राजाओं में नहीं होता। वे लोग अकारण ही अपने विचार बदला करते हैं। इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुम्हें महेन्द्रपुर के राजा की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: महेन्द्रपुर का शासक धीरेन्द्रसिंह अपनी मृत्यु के समय अपने पुत्र महेन्द्र को निकट बुलवाकर उससे बोला–"बेटा, तुम अपनी बहन स्वयंप्रभा का विवाह करके उसके पति को

बेताल कथाएँ

आधा राज्य दे दो।" इस पर महेन्द्र ने अपने पिता के आदेश का पालन करने का वचन दिया। इसके बाद धीरेन्द्रसिंह की मृत्यु हो गई और युवराज महेन्द्र का राज्याभिषेक भी हो गया।

एक बार महेन्द्र जंगल में शिकार खेल रहा था, उसे एक जगह नदी को पार करना पड़ा। एक घाट पर भील युवक रास्ता रोके खड़े हो किसी भील युवती को पुकार रहा था। वह युवती फूल चुनते कह रह थी कि थोड़ा ठहर जाओ, अभी आ जाऊँगी।"

महेन्द्र ने भील युवक को रास्ते से हटने का संकेत करते हुए अपनी तलवार उसकी जांघ पर टिका दी और उसकी ओर अपनी क्रोध भरी दृष्टि डाली।

भील युवक ने मुड़कर देखा। क्रोध में आकर राजा के हाथ की तलवार छीन ली, उसे नदी में फेंकते हुए बोला—"अबे, तुझे ऐसा घमण्ड? मैं अभी तेरी जान ले लूँगा।" यों कहते भील युवक महेन्द्र पर टूट पड़ा। दोनों ने मल्ल युद्ध किया। भील का हाथ ऊँचा रहा। वह महेन्द्र को मारने ही जा रहा था कि फूल चुननेवाली उसकी बहन दौड़ आई और बोली—"ये तो देखने में राजा जैसे लगते हैं। इन्हें मारो मत।"

अपनी बहन की बातें सुन भील युवक महेन्द्र को प्राणों के साथ छोड़ते हुए बोला— "समझ गये हो न? कभी ऐसी दुष्टता किसी के साथ मत करो। अब तुम अपने रास्ते जा सकते हो।"

उसी वक्त महेन्द्र का परिवार आया। राजा का सिर अपमान के भार से झुक गया।

इस घटना के थोड़े दिन बाद राजा का एक सैनिक दल जंगल में आया। भील युवक को अकेला पाकर पकड़ ले गया। राजा ने उसे कारागार में डाल दिया।

राजा ने उस भील युवक को राजद्रोही घोषित कर मृत्यु दण्ड देना चाहा, पर

मंत्रियों ने राजा को ऐसा करने से रोका। क्योंकि कहीं जंगल में रहनेवाले भील युवक को राजद्रोही कैसे साबित करे? यही सवाल था। उसके अपराध की सुनवाई करे तो भरे दरबार में यह बात प्रकट हो जाएगी कि उसने राजा का वध करने का प्रयत्न किया है। इससे न केवल राजा का अपमान होगा, बल्कि राजा की संकुचित मनोवृत्ति का भी पता चल जाएगा। इसलिए यदि चुपचाप उसे कारागार में नज़रबंद किया जाए तो कोई इस बात पर ध्यान न देगा।

इसलिए राजा ने मंत्रियों की सलाह के अनुसार भील युवक को कारागार में बंद कराया।

थोड़े दिन बाद राजा की बहन स्वयंप्रभा भील युवक को देखने गई। उसी दिन से उसने भील युवक को अच्छा खाना खिलाने का प्रबंध किया, साथ ही कारागार में उसे अनेक सुविधाएँ भी दी गईं।

प्रति दिन स्वयंप्रभा को देखते भील युवक उसके साथ प्यार करने लगा। एक दिन उसने स्वयंप्रभा से कहा भी—"तुम मुझसे प्यार करती हो! मैं भी तुम से प्यार करता हूँ। तुम मेरे साथ जंगल में भाग आओ। वहाँ पर हम आराम से अपने दिन बितायेंगे।"

स्वयंप्रभा ने उसे उस समय कोई उत्तर नहीं दिया। उल्टे उसने उस दिन से भील युवक को देखने आने से बंद कर दिया।

इस घटना के थोड़े दिन बाद जेल के अधिकारियों ने भील युवक को कारागार से मुक्त किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन, महेन्द्र ने भील युवक से बदला लेने के ख्याल से उसे कारागार में डलवाया और उसे मार डालने का भी प्रयत्न किया। ऐसी हालत में उसे अचानक मुक्त क्यों किया? उस युवक के द्वारा उसका जो अपमान हुआ था, क्या उसे वह भूल गया था? उसकी बहन स्वयंप्रभा के

व्यवहार का क्या मतलब है? स्वयंप्रभा ने भील युवक को कारागार में सारी सुविधाएँ क्यों करवा दीं? भील युवक ने जब उसे अपने साथ भाग जाने को कहा, तो उसका उत्तर तक दिये बिना उसने उस दिन से उस युवक से मिलना तक बंद क्यों किया? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों कहा—"राजा के व्यवहार तथा उसकी बहन के व्यवहार में अत्यधिक निकट संबंध है। महेन्द्र का भील युवक को बन्दी बनाने तथा उसे राजद्रोही घोषित कर मृत्यु दण्ड देने की बात सोचने का कारण भील युवक के द्वारा उसका अपमान करना नहीं है। भील युवक पराक्रमी और पौरुष रखनेवाला है। राजा की परवाह तक न करनेवाला है। एक बार राजा को हराने के बाद साधारणतया उसके मन में राजा बनने की कामना पैदा हो सकती है। वह भीलों के दल के साथ उसकी राजधानी पर हमला कर सकता है। इसी डर से राजा ने भील को क़ैद कराया। राजा की बहन ने कारागार में स्थित भील युवक की परीक्षा ली कि कहीं राजा के भय का कोई आधार है या नहीं? उस युवती के साथ विवाह करने से उसे आधा राज्य मिल सकता है। पर भील युवक ने आधे राज्य को प्राप्त करने की बात नहीं सोची; बल्कि उसे अपने साथ जंगल में भाग जाने की प्रेरणा दी। बिना किसी प्रकार के प्रयास के प्राप्त होनेवाले आधे राज्य के प्रति लोभ न रखनेवाला युवक क्या युद्ध करके पूरा राज्य हस्तगत करने की बात सोच सकता है? इस प्रकार यह साबित हुआ कि भील युवक राज्य के लिए खतरनाक व्यक्ति नहीं है। इसी कारण राजा ने उसे कारागार से मुक्त किया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
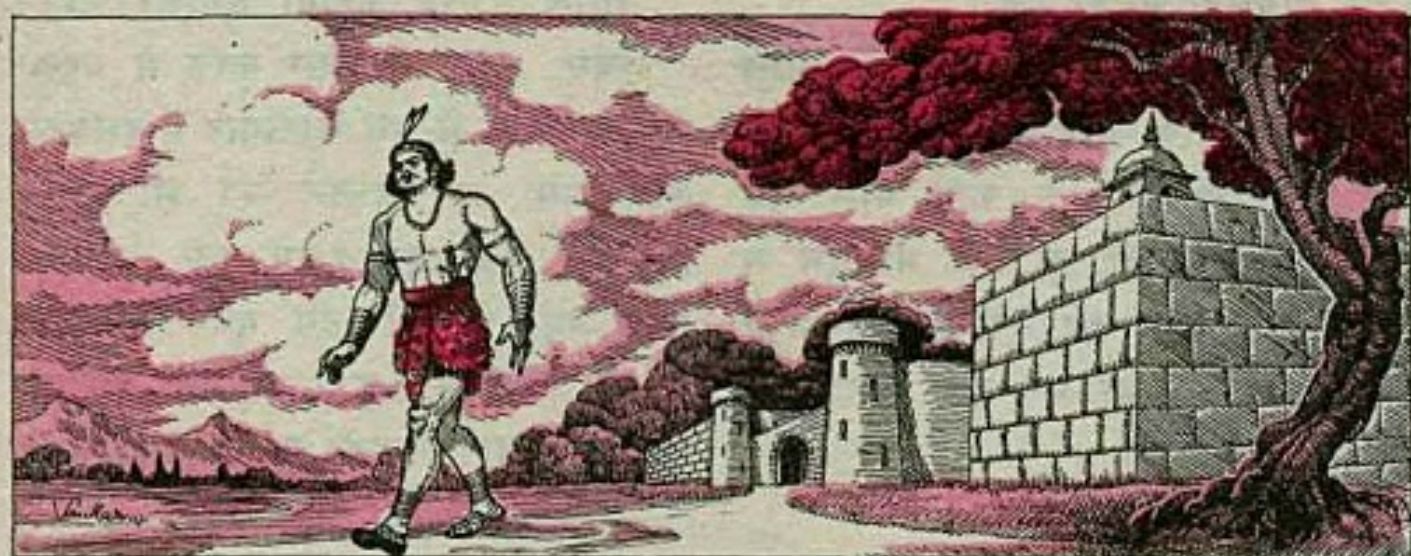
सोनापुर का अद्भुत

सीता का राम के साथ विवाह वैभवपूर्वक संपन्न हुआ। राम सीता को अपने घर ले जाकर सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगा। लेकिन याद रखिये, यह रामायण की कथा नहीं है। यह सीता वीरनगर के मंगलदास नामक किसान की पुत्री है। वह एक संपन्न परिवार का है। सीता उसकी कन्या है। उसका भाई हीरादास उससे चार साल बड़ा है। सीता जब सोलह साल की हुई तब उसका विवाह सोनापुर के किसान रविदास के पुत्र रामदास के साथ किया गया।

इस विवाह के एक वर्ष बाद रामदास के पिता का देहांत हो गया। रामदास के ज्ञातियों ने मुक़द्दमा चलाकर उसके पिता की जायदाद को हड़प लिया। इस पर वह सोनापुर की चीनी मिल में नौकरी पर लग गया और दिन-रात काम करने लगा।

सोनापुर की ज़मीन अधिक उपजाऊ है। वहाँ पर ईख ज़्यादा होती है। दूर से आकर चीनी मिलवाले यहाँ की ईख खरीद ले जाते हैं। लेकिन कालांतर में सोनापुर में ही एक चीनी मिल स्थापित हुई। दूर दूर से लोग आने लगे। उनमें भले और बुरे भी लोग थे। सोनापुर जब औद्योगिक केन्द्र बना, तब वहाँ पर बंधक की दूकानें भी खुल गईं। जुए के घर खुले। शराब की दूकान भी खुल गई। सोनापुर की शांति जाती रही।

कुछ महीने बाद सीता के एक लड़का हुआ। रामदास की कमाई उसके परिवार के खर्च के लिए पर्याप्त थी। लेकिन इस बीच रामदास दुष्टों की संगति में फँस गया। उसे शराब पीने की आदत पड़ गई। उसके साथ काम करनेवाले हलधर ने पहले अपने रुपये खर्च करके रामदास को
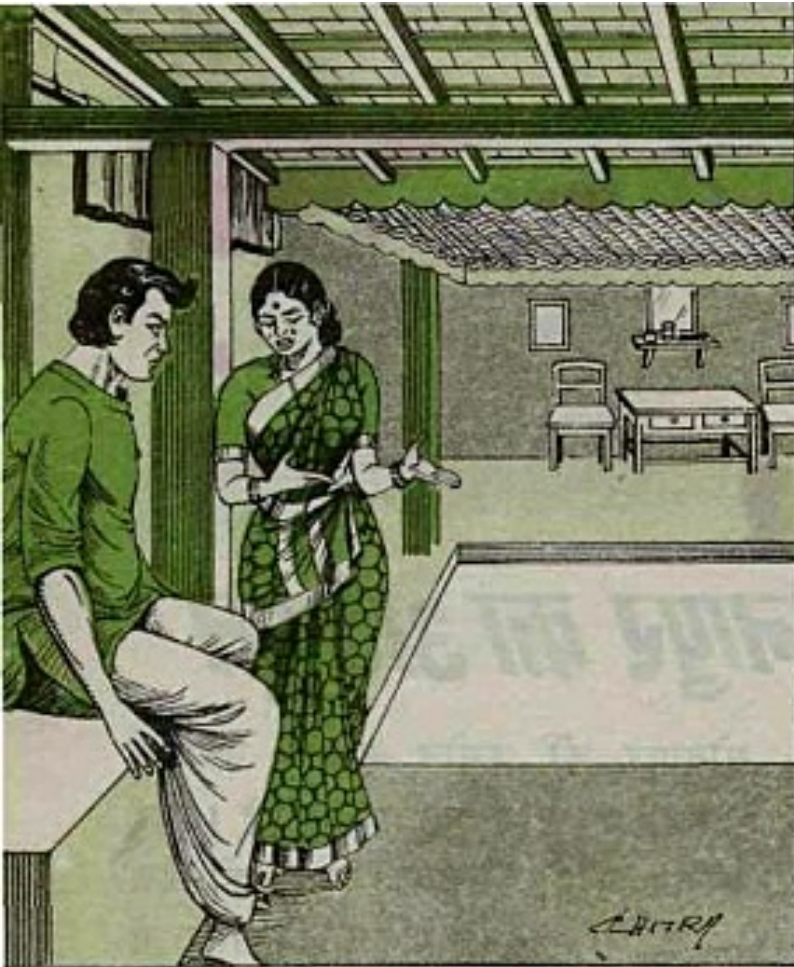
शराब पिलाई, फिर धीरे धीरे उसे आदत पड़ गई। इसके बाद रामदास के पैसों से दोनों पीने लगे। अब सीता और उसके लड़के को भर पेट खाना न मिलता था। उनकी हालत दिन ब दिन बिगड़ती गई। रामदास हर सप्ताह अपनी मजूरी के पैसे लेकर शराब की दूकान में फूंक देता और उसके नशे में चूर हो घर लौटता।

जब सीता का लड़का भूख से परेशान होने लगा, तब सीता एक धनी के घर में काम करते थोड़ा-बहुत कमाने लगी। लेकिन रामदास ने अपनी पत्नी को डरा-धमकाकर, मार-पीटकर उसके गहने गिरवी रखे और उन पैसों से अपने दोस्तों के साथ शराब पीने लगा। जब-तब वह अकारण ही सीता को पीटा करता था।

वास्तव में शराब की दूकान की वजह से सोनापुर के सभी परिवारों का जीवन नरक तुल्य हो गया। सीता इस हालत को सहन न कर पाई। एक दिन वह अपने पुत्र के साथ मायके चली गई।

सीता ने अपनी हालत अपने भाई हीरादास को गुप्त रूप से समझाई। उन दोनों ने यह बात अपने माता-पिता को भी नहीं बताई। सीता अपने पति को साथ न लाई थी और उससे बिना कहे चली आई थी, इस पर उसके पिता को आश्चर्य जरूर हुआ। माता ने सीता को कमज़ोर देख दुख प्रकट किया। सीता ने समझाया कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है. इसीलिए वह थोड़े दिन आराम करने चली आई है।

हीरादास ने अपने मित्र रूपेश को अपनी बहन की हालत समझाते हुए चिट्ठी लिख दी। रूपेश बड़ा ही सूक्ष्म बुद्धिवाला था। वह थोड़ा-बहुत जादू जानता था। एक हफ़्ते के अन्दर वह हीरादास के घर आ पहुँचा। दोनों मित्रों ने बैठकर रामदास की शराब की आदत छुड़ाने का अच्छा उपाय सोचा।

अंत में रूपेश ने कहा—"कोई उपाय मिलना चाहिए, फिर क्या अकेले रामदास

से ही नहीं, सोनापुर के सभी लोगों से शराब पीने की आदत छुड़वा दूंगा।" उसका उद्देश्य था कि सभी व्यसनों में से शराब पीने की लत बड़ी बुरी है। उसके द्वारा होनेवाली हानि का कोई अंत नहीं।

तीन दिन के बीतते-बीतते उसे कोई उपाय सूझा। वह हीरादास को साथ लेकर उस गाँव के टीन का काम करनेवाले के यहाँ गया। उस नाम यदुनाथ था जो हीरादास का मित्र था।

"यदु मामा, मेरे मित्र के लिए एक जादू की चीज़ तैयार करके गुप्त रूप से देनी है। यह बात मामी से भी गुप्त रखनी है।" हीरादास ने कहा।

"अगर बात ऐसी रहस्यपूर्ण है तो मैं तुम्हारी मामी से क्यों बताऊँगा? बताओ, तुम्हें कैसी वस्तु चाहिए?" यदु ने पूछा।

उन्हें एक चोंगी चाहिए थी। वह मामूली चोंगी नहीं, जादू की चोंगी थी। एक चोंगी में दूसरी चोंगी को जोड़ना था। दूसरी चोंगी पहली चोंगी से थोड़ी छोटी होती है। मगर ऊपर के हिस्से में दोनों का व्यास समान होता है। ऊपर की चोंगी की पूंछ में भीतर की चोंगी की पूंछ जुड़ी रहती है। पर दोनों देखने में एक ही चोंगी जैसी लगती है। ऊपर की चोंगी के ऊपरी भाग में एक छोटा-सा छेद होता है।

इस जादू की चोंगी के तैयार हो जाने पर रूपेश ने उसकी पूंछ के नीचे अपनी
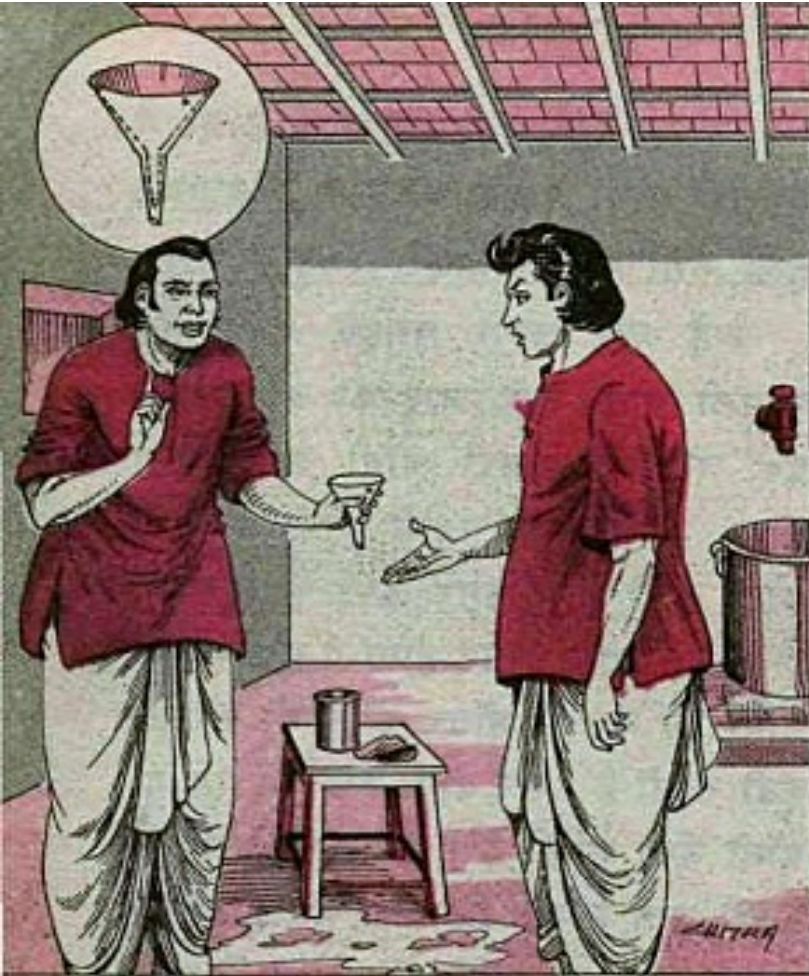
तर्जनी को आड़े रखा और उसमें पानी भर दिया। छेद पर अंगूठा बंद कर पूंछ के नीचे स्थित तर्जनी को हटाया, फिर क्या था, चोंगी का पानी नीचे गिर गया। अंगूठे को छेद पर से हटाये बिना उसने चोंगी पर स्थित नमी को साफ़ पोंछ डाला और चोंगी को हीरादास के पेट के निकट ले जाकर बोला–"अब तुम खांस लो।" हीरादास खांस पड़ा। तुरंत चोंगी में से थोड़ी देर तक पानी छूता रहा।

"कैसा है मेरा ट्रिक?" यदुनाथ ने पूछा।

"जादू तो वाकई तारीफ़ के क़ाबिल है। मगर इस जादू के द्वारा शराबियों को कैसे बदल सकते हो?" हीरालाल ने पूछा।

"जल्दबाजी मत करो! सब कुछ तुम्हें मालूम हो जाएगा।" रूपेश ने कहा।

इस घटना के थोड़े दिन बाद सोनापुर की चीनी मिल के समीप में एक बरगद के नीचे एक बूढ़ा साधू और उसका जवान शिष्य बैठे दिखाई दिये। जल्द ही उनको घेरकर लोग सलाहें और दवाएँ भी माँगने लगे। एक ने सिर दर्द की दवा माँगी। साधू ने कोई चूर्ण दिया और अपने कमण्डलु का जल पिलाया। सर दर्द मिनटों में जाता रहा। वह आदमी साधू के पैरों पर गिरकर बोला–"साधू महाराज, आप तो साक्षात् भगवान ही हैं।"

"मैं भगवान नहीं हूँ, बेटा! लेकिन भगवान के आदेश पर यहाँ आया हूँ। जानते हो, यहाँ पर इन दिनों में इतनी सारी बीमारियों के फैलने का कारण क्या है? शराब पीना ही है। उसकी वजह से पेट में जहर जमा होकर तरह-तरह की बीमारियाँ फैल रही हैं।"

भीड़ मे बैठे हलधर ने इस बात को नहीं माना। उसने पूछा–"साधू महाराज! आप यह क्या कह रहे हैं? देवता भी तो सोमरस का पान करते थे? वह भी तो एक तरह की शराब है?"

"सोमरस शराब नहीं होता, बेटा! और न हम देवता ही हैं।" साधू ने उत्तर दिया।

"शराब की वजह से बीमारी नहीं होती। हम मेहनत करते हैं। शराब पीने से हम में उत्साह पैदा होता है!" हलधर ने अपना तर्क उपस्थित किया।

"तुम चाहे लाख कहो, मगर शराब पीने से बीमारी होती है! चाहे तो मैं साबित कर सकता हूँ।" इन शब्दों के साथ साधू ने सर दर्दवाले को अपने निकट बुलाया। अपने शिष्य की थैली में से एक चोंगी बाहर निकाली। उसे उस व्यक्ति के पेट पर टिकाकर धीरे से खांसने को कहा। उसके खांसने पर चोंगी की पूंछ में से काला द्रव बाहर निकल आया। इस अद्‌भुत को देख सब लोग चकित रह गये।

"मैं यह साबित कर सकता हूँ कि शराब पीनेवाले हर व्यक्ति के पेट में ऐसा जहर होता है! यह लोगों की जान लेता है। इससे जो बचना चाहते हैं, उन्हें मैं एक दिव्य औषध देकर इस जहर को निकाल सकता हूँ।" साधू ने समझाया।

जिन लोगों का साधू की इस करामात पर विश्वास जम गया, वे लोग दूसरे दिन साधू की सेवा में पहुँचे और शराब न पीने की शपथ लेकर दिव्य-औषध प्राप्त करने लगे। साधू के अनुचरों ने शराब की दूकान पर निगरानी रखी और इस बात का उन लोगों ने ख्याल रखा कि औषध

ग्रहण करनेवालों में से कौन कौन फिर से शराब पीने दूकान पर पहुँचे। ऐसे लोगों की जांच साधू ने चोंगी के द्वारा की, तब उनके मुँह से काला जहर बाहर निकला। सचमुच जिन लोगों ने शराब पीना बंद किया था, उनकी जांच करने पर चोंगी में से स्वच्छ जल बाहर निकला।

साधू के द्वारा चलाया गया यह आन्दोलन इतना सफल रहा कि शराब की बिक्री अचानक बंद हो गई। अनेक परिवारों में फिर से शांति छा गई और खुशी की लहर दौड़ गई। जिन लोगों में यह परिवर्तन हुआ था, उनमें रामदास भी एक था। सीता के मायके जाने पर रामदास अत्यंत दुखी था और आख़िर वह साधू की शरण में गया।

पर इधर शराब के दूकानदार और हलधर साधू पर सख्त नाराज़ हो गये थ। दो हफ़्ते से शराब की बिक्री न होती थी। शराब के दूकानदार न हलधर से बताया कि उसने इसके पूर्व दो लोगों की हत्या की है, पर गिरफ़्तार होने से बच रहा, इस बार वह साधू की ज़रूर हत्या करेगा।

दूकान में काम करनेवले एक नौकर ने ये बातें सुनीं और उसने उसी वक़्त जाकर साधू तथा पुलिस को भी यह ख़बर दी। उस दिन रात को जब हलधर साधू की हत्या करने पहुँचा, उस वक़्त साधू की जगह कपड़ों की एक गठरी रखी गई थी जिस पर दुपट्टा ओढ़ दिया गया था। फिर क्या था, हलधर तलवार के साथ पकड़ा गया। तब पता चला कि हलधर तो पुराना अपराधी है। उसने इसके पहले रंजित और कालू नामों से अनेक अपराध किये हैं।

इस प्रकार साधू रूपेश ने सोनापुर की चीनी मिल के प्रदेश में शराब क सेवन को बिलकुल बंद करवा डाला। रामदास ने अपने ससुराल जाकर सीता से माफ़ी माँग ली। इसके बाद उसकी गृहस्थी में किसी प्रकार की भी हलचल न मची। शांतिपूर्वक उनके दिन बीतने लगे।

१७८. अमेरिका में हानिमन की मूर्ति

वाशिंगटन के प्रधान पथ पर डैनियल वेबस्टर की कांसे की मूर्ति के सामने शाम्यूल क्रिस्टियन फ्रीडरिक हानिमन की मूर्ति है। इन्होंने होमियोपैथी की चिकित्सा पद्धति का आविष्कार किया था।
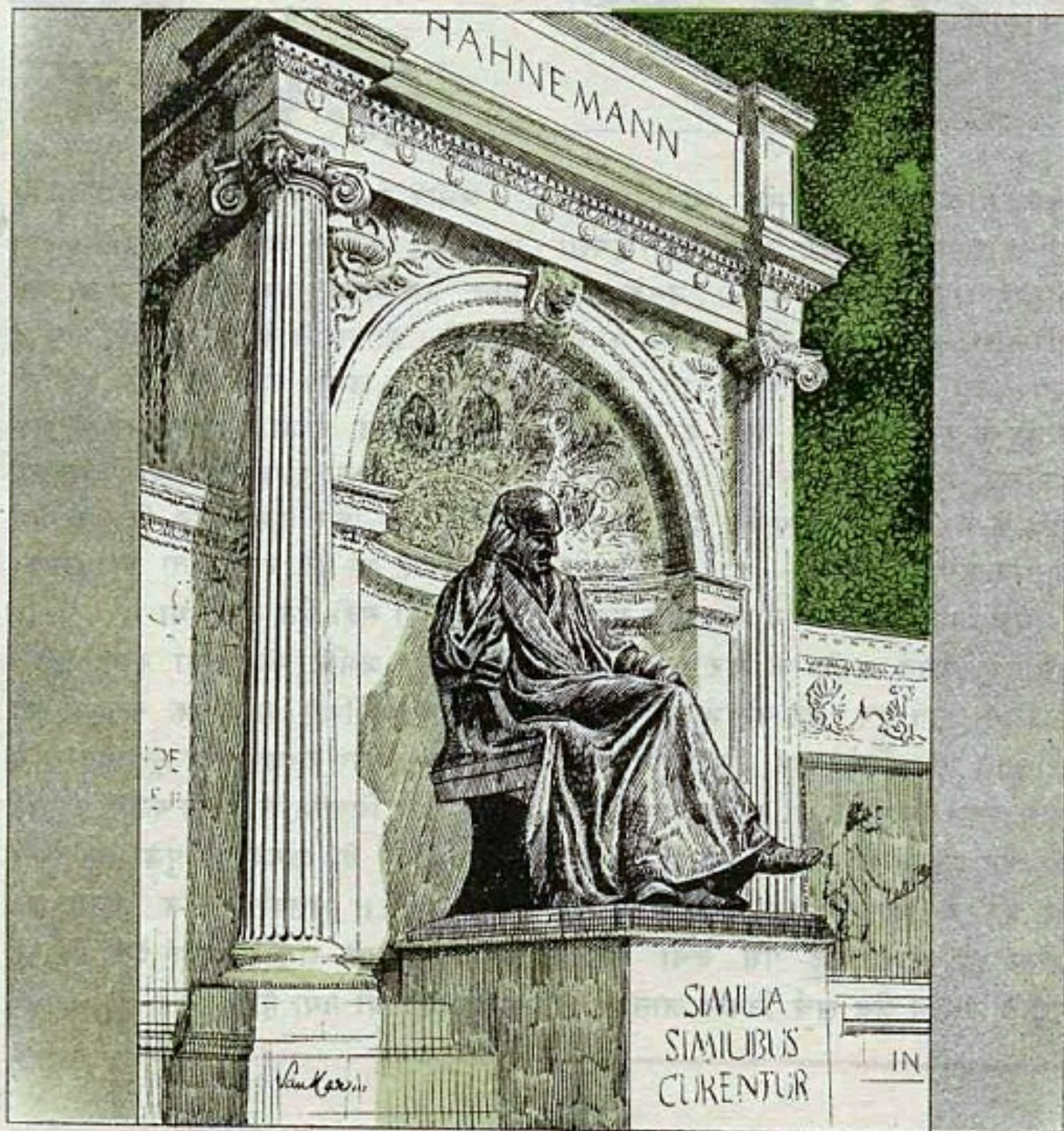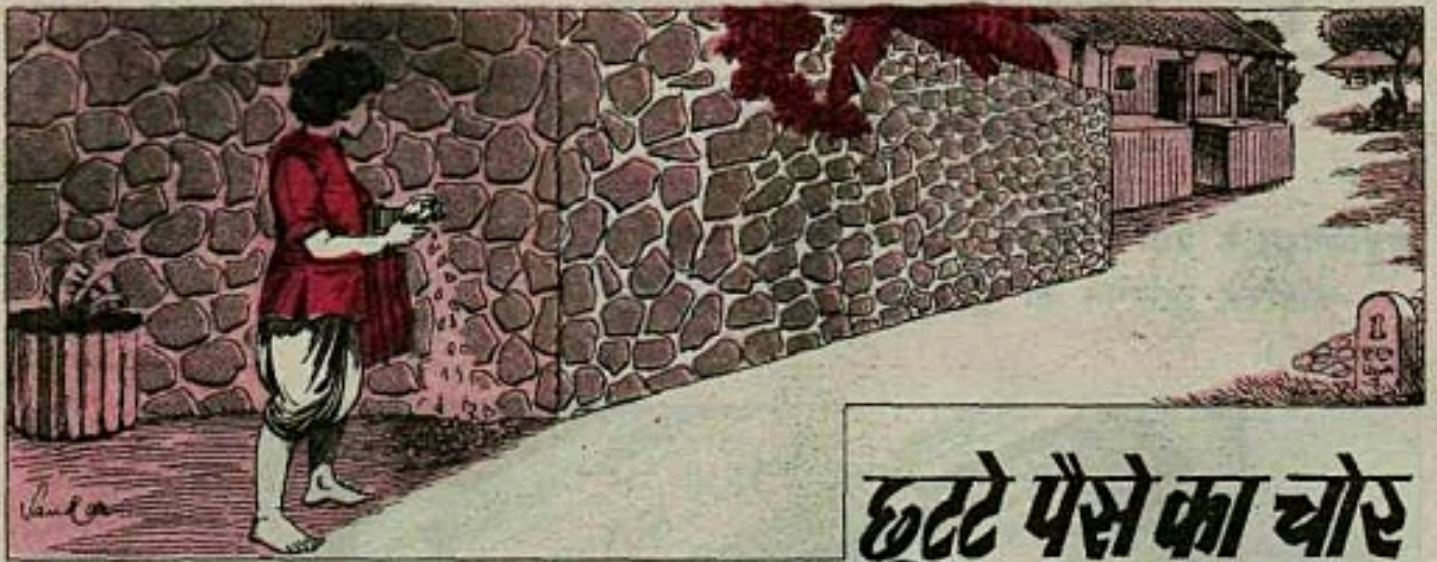
छुट्टे पैसे का चोर

एक गांव में एक अमीर था। उसके कोई संतान न थी, उसकी पत्नी हमेशा बीमार रहा करती थी। उसके घर हरिलाल नामक एक नौकर काम करता था। वह ईमानदार था। घर के व बाहर के काम भी वही देखा करता था। इसलिए अमीर हरिलाल के हाथ घर के खर्च के मद्दे जो भी रुपये-पैसे देता, उसका हिसाब मांगता न था।

एक बार हरिलाल बीमार पड़ गया। इसलिए उसने अमीर के घर काम करने के लिए अपने पुत्र रतन को भेजा।

रतन भी अपने बाप की भांति सभी काम अच्छे ढंग से किया करता था, लेकिन छुट्टे पैसे हड़पने नी उसकी बुरी आदत थी। वह घर के लिए सामान खरीदने बाजार जाता तो थोड़े छुट्टे पैसे बचा लेता। उसीसे उसका जेब खर्च निकल जाता।

अमीर ने प्रारंभ में इस पर कोई ध्यान न दिया, लेकिन जब एक महीना बीत गया, तब देखा, घर का ख़र्च थोड़ा बढ़ गया है। हीरालाल के समय इतना ख़र्च न हुआ था। अमीर को रतन पर शक हो गया। उसने चीज़ों के दाम पूछना शुरू किया। रतन चीज़ों का दाम छवन्नी, अठन्नी बढ़ा कर इस तरह हिसाब देता जिससे वह जो पैसे बचा लेता था, उसका हिसाब भी सही बैठ जाता था।

लेकिन अमीर की शंका बनी रही। वह घर के लिए आवश्यक वस्तुओं की फेहरिश्त तैयार करता और दूकानदारों से उनके दाम लिखवा लाने को कहता। पर रतन चीज़ों के दामवाला पुर्जा फाड़ कर फेंक देता। उसकी खोज करने का अभिनय करके अंत में बता देता कि वह पुर्जा कहीं खो गया है।

यशोधरा नारंग

अमीर का संदेह पक्का हो गया कि रतन छुट्टे पैसे हड़प रहा है। पर उसकी चोरी को साबित करना या उसको नौकरी से हटाना भी अमीर के हाथ की बात थी। मगर अमीर यह न चाहता था कि एक गरीब के मुँह का कौर छीन लिया जाय। उल्टे वह हीरालाल का बेटा है। हीरालाल कई सालों से ईमानदारी के साथ उसके यहाँ काम करता आया है। जब से वह बीमार पड़ गया, तब से उसकी बीमारी का सारा खर्च अमीर ही उठा रहा है। इसलिए अमीर ने सोचा कि रतन के प्रति कड़ा व्यवहार किये बिना ही उसकी इस आदत को छुड़ा देना चाहिए।

उस दिन से अमीर में भुलक्कड़ी के लक्षण दिखाई देने लगे। एक बार अमीर ने रतन को बुलाकर कहा—"रतन, मेरे कमरे में खूंटे पर अंगोछा लटकाया हुआ है, लेते आओ।"

रतन ने अमीर की ओर आश्चर्य के साथ देखा और कहा—"मालिक! अंगोछा तो आपके कंधे पर ही तो है।"

एक बार अमीर ने कहा—"रतन, मेरे चश्मे मेज पर रखे हुए हैं, लेते आओ।"

मगर चश्मे मेज़ पर न थे, बड़ी खोज-ढूंढ़ के बाद चश्मे अलमारी में पाये गये।

"मेज पर रखे हुए चश्मों को तुमने अलमारी में क्यों रखा?" अमीर ने रतन को डांटा।

अमीर का भुलक्कड़पन धीरे-धीरे रतन की परेशानी का कारण बना।

एक दिन अमीर ने रतन के हाथ पैंसे देकर कुछ चीज़ें ख़रीद लाने को कहा। रतन अमीर के कहे मुताबिक़ सारी चीज़ों को खरीद लाया।

अमीर ने उन चीज़ों को देखकर कहा– "अरे सुनो, मेरे कहे मुताबिक़ क्यों न लाये? सारी चीज़ें ज़्यादा क्यों लाये? अरहर की दाल एक सेर लाने को कहा तो दो सेर क्यों लाये? मैं कुम्हाड़ा लाने को बोला तो तुम चचीण्डा ले आये। ज़रा संभल कर काम करो। जो जो चीज़ें तुम ज़्यादा ले आये हो, उन्हें वापस कर पैंसे लेते आओ; समझें।"

"मालिक, आप जितनी चीज़ें लाने को बोले, मैं उतनी ही चीज़ें ले आया।" इन शब्दों के साथ रतन कुछ कहने को हुआ, इस पर अमीर उसे डांटकर बोला– "अरे कमबख़्त भुलक्कड़, तुम मुझ को झुठलाना चाहते हो? तुम कुछ ठीक से सुनते-उनते नहीं, उल्टे मुझ पर दोषारोपण करते हो? जाओ, ये चीज़ें लौटाकर पैंसे लेते आओ।"

मालिक को मन ही मन गालियाँ सुनाते रतन दूकान पहुँचा। कुछ दुकानदारों की चीज़ें वापस करके पैंसे लिये, कुछ लोगों ने तो अपनी चीज़ें वापस नहीं ली। उनके दाम तो रतन को अपनी जेब के पैंसे अमीर को देने पड़े।

इस तरह दो-तीन बार हुआ तो रतन का सिर चकराने लगा। उस दिन से रतन अपने मालिक से चीज़ों की फेहरिश्त लिखवा कर ले जाता, दूकान में जाकर चीज़ें खरीद लेता, उनका दाम उसी फेहरिश्त पर लिखवा लाता और चीज़ों के साथ वह फेहरिस्त मालिक के हाथ सौंप देता। अमीर के भुलक्कड़पन से छुट्टी पाने के लिए इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय रतन के सामने न था। पर अमीर के लिए रतन की चोरी को रोकने के लिए यही एक अच्छा उपाय साबित हुआ।

गवाह

एक व्यापारी के घर में घुसकर एक चोर ने आधी रात के वक्त सारी चीज़ें लूट लीं। व्यापारी ने चोर को पहचाना, न्यायाधीश के सामने उसे हाज़िर करके फ़रियाद की।

न्यायाधीश ने व्यापारी से पूछा–"क्या तुम्हारे पास इस बात की कोई गवाही है कि इसी ने तुम्हारे घर में घुसकर चोरी की?"

व्यापारी ने बताया कि कोई प्रत्यक्ष गवाही नहीं है। न्यायाधीश ने बताया कि इसके चोरी करते समय देखनेवालों की गवाही न हो तो फ़रियाद पर विचार करना बेकार है।

फिर क्या था, व्यापारी ने तुरंत अपना जूता निकाला और न्यायाधीश के सामने ही चोर को पीटा।

न्यायाधीश ने आश्चर्य में आकर पूछा–"तुम इसको पीटते क्यों हो?"

"सरकार, इसलिए कि इसने मुझे पहले नहीं बताया कि अमुक वक्त यह मेरे घर में चोरी करनेवाला है। इसलिए मैं वक्त पर गवाहों को तैयार न रख सका। मुझे इसने ऐसा मौक़ा नहीं दिया, इसीलिए पीटा।" व्यापारी ने उत्तर दिया।
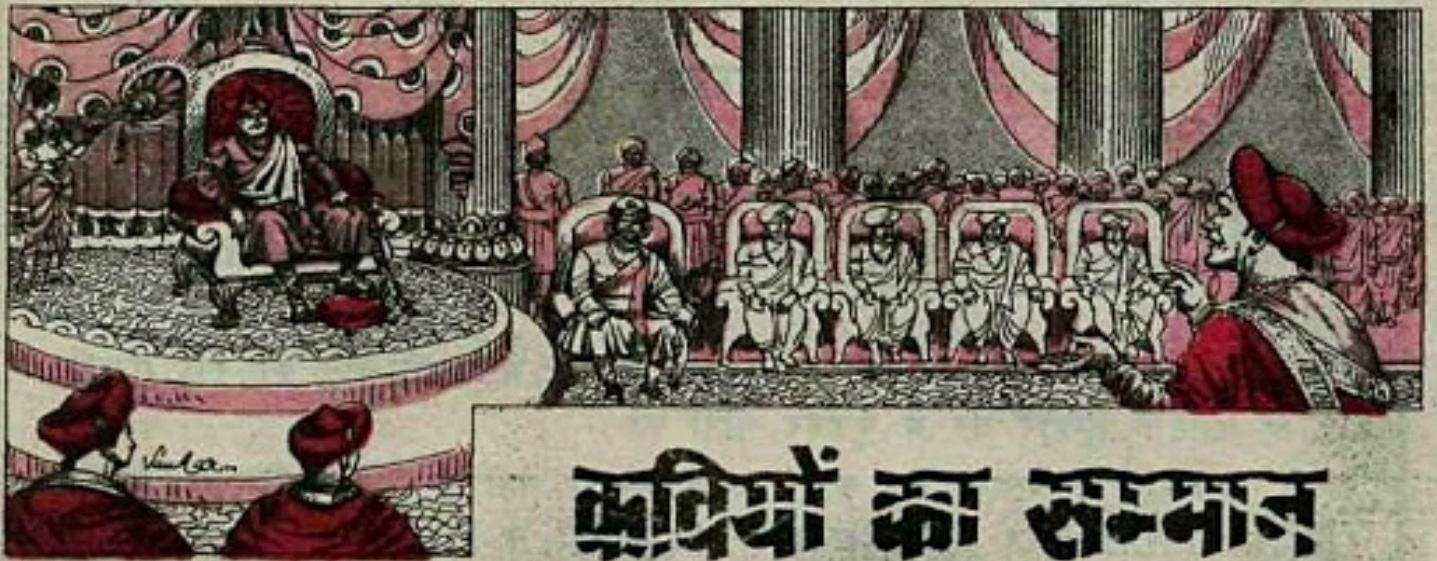
कवियों का सम्मान

चन्द्रगिरि का शासक कमलवर्मा कलाप्रेमी था। उसके दरबार में कवि, गायक, नर्तक, नटी तथा अन्य कलाकार भी थे। दरबार में प्रति दिन साहित्य-गोष्ठी हुआ करती थी जिसमें कवि और पंडित भाग लेते थे। कई नागरिक दरबार में उपस्थित होकर गोष्ठियों का लाभ उठाते थे। जनता में उन कवियों के अनेक प्रशंसक थे।

राजा कमलवर्मा के मन में यह विचार आया कि यह जान ले कि जनता में इन कवि-पण्डितों में ज्यादा लोकप्रिय कौन है? उसने इस संबंध में अपने मंत्री की सलाह माँगी। मंत्री ने सोच-समझकर राजा को सलाह दी–"महाराज, प्रमुख कवि थोड़े समय के लिए देशाटन करके अपना कविता-पाठ करे, जनता यथोचित रूप में कवियों का अभिनंदन करके उन्हें उपाधियाँ प्रदान करें।" राजा ने इसी प्रकार की घोषणा कराई।

कमलवर्मा के दरबार में चार कवि प्रसिद्ध थे। उनके नाम क्रमशः नंदकुमार, अक्षयशर्मा, कृष्णशास्त्री तथा वनमोहन थे। इन कवियों के अनेक प्रिय पाठक और श्रोता थे। अपने प्रिय कवियों का देशाटन करते देख लोग बहुत ही प्रमुदित हुए। उन लोगों ने अपने-अपने नगरों में अपने प्रिय कवियों का अभिनंदन करने के लिए भारी पैमाने पर आयोजन किया। उत्तर प्रांत में नंदकुमार, दक्षिण में अक्षयशर्मा, पूर्वी प्रदेश में कृष्णशास्त्री तथा पश्चिम में वनमोहन का ठाठ से अभिनंदन हुआ। इसका प्रमुख कारण यह था कि ये लोग उन उन प्रदेशों के ही थे। अपने अपने प्रांत में उन कवियों का कनकाभिषेक हुआ। उन्हें सम्मान-पत्र दिये गये और

उपाधियाँ भी दी गईं। नंदकुमार को कवि सौर्वभौम की उपाधि प्राप्त हुई। अक्षयकुमार को कवि सम्राट! कृष्णशास्त्री को कवि चक्रवर्ती तथा वनमोहन को कवि राज राज की उपाधियाँ मिलीं।

उन कवियों को देश के अन्य प्रदेशों में उल्लेखनीय सम्मान व स्वागत प्राप्त नहीं हुआ। कहीं कहीं उनकी सभाओं में हो-हल्ला भी मच गया था। कुछ समय बाद देशाटन समाप्त कर चारों कवि राजधानी को लौट आये।

राजा ने कवियों के अनुभव ध्यान से सुने। मगर उनकी शंका दूर नहीं हुई। सभी कवियों को समान रूप से सम्मान, उपाधियाँ और अनादर भी प्राप्त हुआ था। राजा यह समझ न पाया कि उनके दरबार के चारों कवियों में से किसको ज्यादा लोकप्रियता प्राप्त हुई!

राजा ने मंत्री को पुनः बुलाकर कहा– "मंत्री महोदय, आप देशाटन करके इस बात का पता लगाइए कि हमारे इन चार कवियों में से कौन अधिक लोकप्रिय है? मैं उसी कवि को अपने दरबारी कवि बनाना चाहता हूँ।"

मंत्री ने स्वयं देशाटन करके कवियों के बारे में थोड़ा समाचार जान लिया। देश में प्रत्येक कवि के प्रशंसक हैं। वे लोग

अपने प्रिय कवियों की प्रशंसा के साथ अन्य कवियों की निंदा भी कर रहे हैं। चारों कवियों के प्रशंसकों की संख्या लगभग बराबर की है।

मंत्री की समझ में न आया कि क्या किया जाय! यदि वह यह साबित न कर पाया कि चारों में से कोई एक ज्यादा लोकप्रिय है, राजा चुप रहनेवाले नहीं। किसी एक को दरबारी कवि बनाया जाय तो देश की तीन चौथाई जनता उसकी आलोचना करेगी।

यों सोचकर मंत्री बड़ी निराशापूर्वक राजधानी को लौट आया। मंत्री ने घर लौटकर देखा कि उसकी पुत्री प्रसव के

लिए घर आई हुई थी और उसने एक सुंदर शिशु का जन्म दिया था। वह अपने पुत्र को प्यार करते-पुचकारते कह रही थी– "हे मेरे राजा बेटा! मेरे राजकुमार!"

मंत्री ने ये बातें सुनीं। उसके दिमाग में कोई बात सूझ पड़ी। उसका दिल हलका हो गया। इसके बाद स्नानादि से निवृत्त होकर मंत्री बड़ी प्रसन्नतापूर्वक राजा के दर्शन करने चला गया।

राजा ने मंत्री से पूछा–"मंत्रीवर! क्या आप पता लगा आये? कौन कवि श्रेष्ठ हैं?"

मंत्री ने हँसकर उत्तर दिया–"महाराज! बच्चे को जननेवाली हर माता अपने पुत्र को एक राजा मानकर प्यार कर रही है। क्या सचमुच वह उसे ऐसा मानती है?"

"ऐसे मूर्ख कौन होते हैं मंत्री महोदय?" राजा ने कहा।

"मुझे लगता है कि हमारी प्रजा में अत्यधिक स्नेह के अतिरिक्त सच्चे अर्थों में साहित्य के प्रति अभिरुचि नहीं है। महाराज! जनता ने कवियों को जो उपाधियाँ दी हैं, वे कवियों की सामर्थ्य को देखकर दी हुई नहीं हैं। अपने प्रिय कवि के अतिरिक्त दूसरे कवि को कोई बड़ी उपाधि न मिले, इस ख्याल से उन लोगों ने कवि सार्वभौम, कवि सम्राट, कवि चक्रवर्ती, कवि राज राज जैसी उपाधियाँ दी हैं।" मंत्री ने समझाया।

"तब तो हम दरबारी कवि को कैसे चुनें?" राजा ने पूछा।

"सुनते हैं कि सम्राट कृष्णदेवराय के दरबार में अष्टदिग्गज नामक आठ कवि थे। उनके सामने भी ऐसी ही कठिनाई शायद उपस्थित हुई होगी! आप भी इन चारों कवियों को ब्रह्मा के चार मुख घोषित करके समान पद दीजिए। फिर आप की समस्या हल हो जाएगी।" मंत्री ने सुझाया।

राजा कमलवर्मा ने मंत्री के कहे अनुसार घोषित करके देश में प्रांतीय भावनाओं को कम करने के अनेक प्रयत्न किये। आखिर उनके ये प्रयत्न सफल हुए।
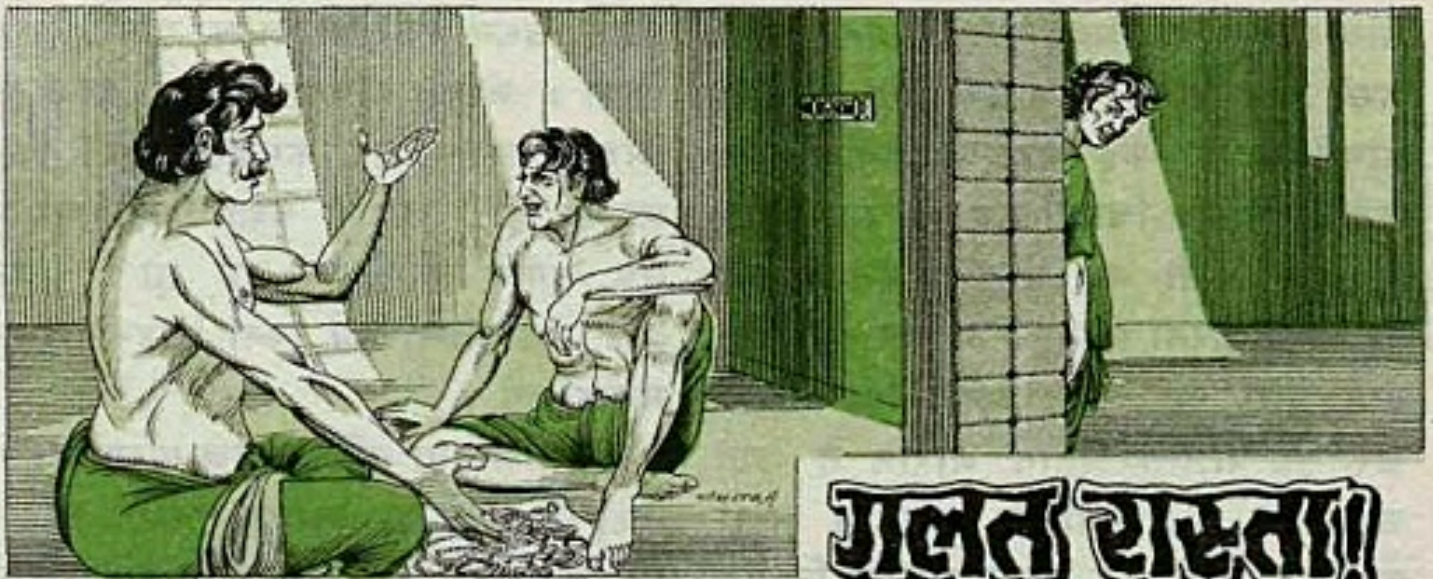
गलत रास्ता!

कई शताब्दियों के पहले की बात है।

एक गाँव में सुजानसिंह नामक एक युवक था। वह मजदूरी करके अपना पेट पालता था। दिन-भर मेहनत करता, उस मजूरी से अपना पेट भरता और रात के वक़्त गाँव की सराय में सो जाता।

उसी सराय में रात के वक़्त कुछ भिखारी भी सोया करते थे। सुजान का उन भिखारियों के साथ अच्छा परिचय हो गया। उनके साथ बातचीत करते सुजान ने एक बात जान ली कि भिखारी उसकी भांति कोई शारीरिक श्रम किये बिना उससे ज्यादा आराम से अपने दिन काट रहे हैं।

सुजान के दिमाग में यह विचार आया कि वह भी भिखारी की जिंदगी बसर करते क्यों न सुख भोगा जाय! उस दिन से सुजान ने मजदूरी करना छोड़ भीख माँगना शुरू किया। इस तरह थोड़े दिन बीत गये।

एक दिन सराय के चबूतरे पर सोनेवाले सुजान की आँखें आधी रात के वक़्त अचानक खुल गईं। बगल के कमरे में कुछ लोगों के बात करते उसे सुनाई दिया। सुजान ने उस कमरे के निकट जाकर भीतर की सारी बातचीत सुन ली। वह समझ गया कि वे लोग कौन हैं।

कमरे के भीतर दो व्यक्ति रुपये-पैसे आपस में बाँट रहे थे। उनकी बातचीत से सुजान ने जान लिया कि वे लोग छे महीने तक बिना मेहनत के उस धन से सुखपूर्वक जी सकते हैं, उसने भाँप लिया कि उन दोनों ने मिलकर वह धन और गहने चुरा लिये हैं।

सुजान के दिमाग में एक और बात कौंध गई। उसे लगा कि मजदूरी करने से

राम निवास शर्मा

भीख माँगना आरामदेह ज़रूर है, मगर चोरी करके जीने में और मजेदार होगा। भीख माँगने में तो कई घरों के दर्वाज़ों पर खड़े हो चिल्ला-चिल्ला कर पुकारना पड़ता है, यदि किसी जून भीख माँगने न गया तो फाका करना पड़ता है। पर चोरी की बात ऐसी नहीं, एक जून थोड़ी मेहनत करे तो पांच-छे महीने आराम से काटे जा सकते हैं। इसलिए सुजान ने चोरी करने के धंधे को अपनाने का निश्चय कर लिया।

चोरी करने का धंधा थोड़े समय तक आराम से चला। मगर इसके साथ उसका लोभ भी बढ़ता गया। अधिक कमाने के ख्याल से सुजान ज्यादा चोरियाँ करते आखिर एक दिन पकड़ा गया। लोगों ने उसे पकड़ कर उसकी मरम्मत की और उसे पुलिस के हाथ सौंप दिया। उसे एक साल की सज़ा हुई।

सजा भोग कर एक साल बाद सुजान घर लौटा। तब तक उसकी आँखें खुल गईं। उसने फिर से भीख माँगना शुरू किया। लेकिन गाँववाले उसको देखते ही झिड़कने लगे–"अरे, कमबख्त चोर! फिर आ गये हो? रात के वक़्त किसी घर में सेंध लगाने की सोच रहे हो?" सब कोई उसे भीख दिये बिना झिड़की देकर भगाने लगे।

भीख माँगना मुश्किल देख सुजानसिंह ने मजदूरी करने का निश्चय किया, लेकिन सब कोई भी उसे काम देने से कतराने लगे। उल्टे कहने लगे–"चोर को कोई निकट आने देगा! बदमाश! भाग जाओ।"

आखिर सुजान को इस सचाई का बोध हुआ कि अच्छे मार्ग से बुरे रास्ते पर जाना आसान है, लेकिन बुरे रास्ते से अच्छे रास्ते पर आना कठिन है। इसलिए वह अपने गाँव को छोड़ शरीरिक श्रम करके जीने के ख्याल से दूसरे गाँव में चला गया। इस अनुभव के कारण उसमें ज्ञानोदय हो गया था।

अतृप्त कामना

रामप्रसाद और प्रसूनांबा नामक दंपति का इकलौता पुत्र अनंत था। वह सुंदर और बुद्धिमान था। शहर में कोई नौकरी करता था।

प्रसूनांबा गहनों के पीछे पागल रहनेवाली औरत थी। उसकी देह गहनों से लदा हुआ था, फिर भी करधनी बनवाने की उसकी इच्छा रह गई थी। वह जब भी करधनी की बात उठाती, रामप्रसाद मजाक में कह बैठता था– "अच्छा हुआ, तुमने गाँव के बीच के बरगद के लिए करधनी बनवाकर देने को नहीं कहा।"

यह बात सच थी कि प्रसूनांबा मोटी-ताज़ी थी, जब उसे यह विश्वास हो गया कि उसका पति किसी भी हालत में करधनी बनाकर न देगा, तब उसने स्पष्ट कह दिया–"हमारे बेटे को जो दहेज मिलेगा, उस रक़म से में करधनी बनवा लूँगी। उस रक़म को कोई मुझसे छीन नहीं सकता।"

अनंत नौकरी के काम पर प्रति दिन शहर हो आया करता था। शहर की सीमा पर स्थित एक खपरैल के मकान में रहनेवाली एक सुंदर युवती रोज अनंत को आते-जाते देखा करती थी। यह बात अनंत नहीं जानता था।

एक दिन शाम को अनंत जब घर लौट रहा था, तब अचानक पानी बरसा जिससे वह भीग गया। रास्ते में उस मकान को देख उसके भीतर पहुँचा।

इतने में मकान के भीतर से वह युवती आई, सिर पोंछने के लिए तौलिया दिया और पीने को गरम दूध दिया। उस युवती से अनंत आकृष्ट हुआ। उसका नाम रूपा था। अनंत ने जान लिया कि

सुजाता अग्रवाल

रूपा का पिता बढ़ईगिरी करता है और वे बहुत ही गरीब हैं।

इसके बाद रोज वे दोनों मिलते, अंधेरा फैलने तक बातचीत करते। दोनों एक दूसरे से गहरा प्यार करने लगे।

एक दिन रूपा ने अनंत से कहा–"हमारी शादी की बात क्यों नहीं सोचते? लेकिन मेरे बापू एक पैसा भी दहेज़ न देगा।"

"दहेज़ माँगता कौन है? आज ही मैं अपने माता-पिता से शादी की बात करूँगा।" अनंत ने समझाया।

घर लौटते ही अनंत ने अपने माता-पिता से रूपा की बात सच्ची सच्ची बता दी।

"तुम्हें अगर लड़की पसंद है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" रामप्रसाद ने अपनी सम्मति दी। लेकिन प्रसूनांबा बिगड़कर बोली–"बेटा, तुम प्यार और शादी की बात करने लगे? लेकिन याद रखो, मेरे लिए करधनी बनवाने की शर्त पर ही यह शादी हो सकती है।"

"रूपा का बाप दहेज़ न दे सकेगा।" अनंत ने सच्ची हालत बताई।

"ओह! ऐसे सुंदर दामाद वो मुफ़्त में पाना चाहता है? वह दाल मेरे सामने गलने की नहीं, याद रखो।" प्रसूनांबा ने साफ़ कह दिया।

अनंत नाराज़ हो घर से चला गया।

"बेटा, रुक जाओ।" ये शब्द कहते रामप्रसाद उसके पीछे चला गया। वह अंधेरा फैलने पर लौट आया, पत्नी को डांटते हुए बोला–"बेटा कहीं दिखाई नहीं दे रहा है। बेचारा वह उस कन्या से शादी करना चाहता है तो तुम मान क्यों नहीं लेती? तुम बूढ़ी हो गई हो? गहनों के पीछे पागल क्यों रहती हो?"

"क्या मैं बूढ़ी हो गई हूँ? मेरी उम्र अभी पचास की भी पूरी नहीं हो पाई है; हमारी शादी के हुए तीस साल गुजर गये, लेकिन पत्नी के लिए एक करधनी तक बनाकर देने की सामर्थ्य तुम नहीं रखते!

में लड़के से बनवाना चाहती थी तो तुम्हें क्यों ईर्ष्या हो रही है?" प्रसूनांबा ने अपने पति को ताने दिये।

उस दिन रात को पति-पत्नी ने खाना खाया। प्रसूनांबा बर्तन-भांड़े मल रही थी, तभी बाहर से किसी के पुकारने की आवाज सुनाई दी—"पंडितजी! पंडितजी!"

रामप्रसाद के पिता को लोग "पंडितजी" पुकारा करते थे। मगर वह छे साल पहले ही मर चुका था।

"कौन है?" ये शब्द कहते रामप्रसाद और प्रसूनांबा बाहर आये।

बाहर एक क़ीमती घोड़ा गाड़ी खड़ी थी। उस पर रेशमी पर्दे झल रहे थे। गाड़ी में से एक बूढ़ा उतर आया। वह क़ीमती वस्त्र पहने हुए था। उसके दसों उँगलियों में चकाचौंध करनेवाली अंगूठियाँ चमक रही थीं।

"पंडितजी का स्वर्गवास हुए छे साल गुजर गये हैं। वे मेरे पिता थे।" रामप्रसाद ने बूढ़े से कहा।

"क्या कहा? पंडितजी का स्वर्गवास हो गया है?" यों कहते बूढ़ा चबूतरे पर लुढ़क पड़ा और आँसू पोंछने लगा।

"आप मेरे पिता को कैसे जानते हैं?" रामप्रसाद ने पूछा।
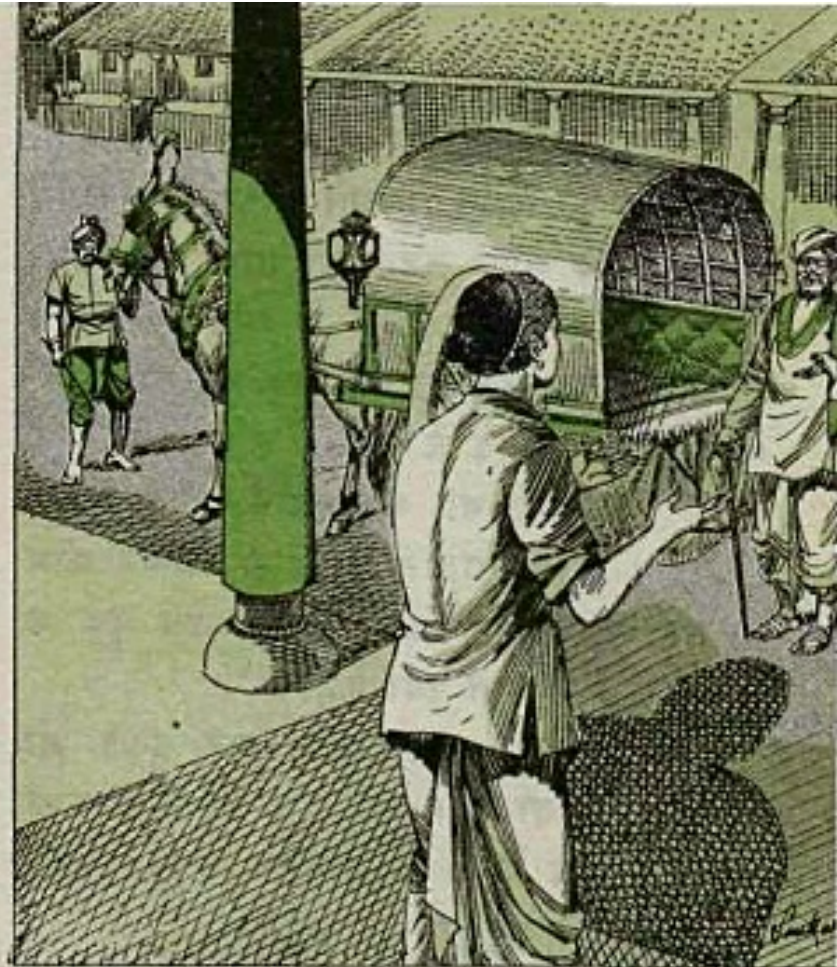
"वे मेरे बचपन के मित्र थे। विवाह होने तक हम साथ साथ रहें। हम दोनों ने रिश्ता जोड़ना चाहा। मगर हम दोनों के लड़के ही हुए, इसलिए हमारी इच्छा पूरी न हो पाई। मैं विदेशों में व्यापार करने गया। खूब धन कमाया। मेरे पुत्र के एक लड़की है, मैंने सुना कि पंडितजी के एक पोता है। इसलिए विदेशों से लौटते ही बड़ी आशा के साथ यहाँ पर आ पहुँचा। मेरी आशाओं पर पानी फिर गया है। अब मैं जाता हूँ।" ये शब्द कहते बूढ़ा उठ खड़ा हुआ।

"काकाजी, रुक जाइए! मेरे ससुरजी ने भी मरने से पहले मुझसे यही बात कही

थी। इस शादी के होने पर ही उनकी आत्मा को शांति मिलेगी। इसीलिए हमने आज तक अपने लड़के की शादी नहीं की। लड़का काम पर शहर में गया हुआ है। आप आज रात को यहीं पर रह जाइए!" प्रसूनांबा ने बूढ़े से कहा।

फिर क्या था, वह रसोई बनाने में डूब गई। रामप्रसाद ने रसोई में जाकर क्रोध भरे शब्दों में पूछा-"तुमने उस बूढ़े से झूठ-मूठ ये बातें क्यों कहीं?"

"अगर लक्ष्मी हमारा घर ढूंढ़ते आ जाती हैं तो क्या उन्हें हम घर से निकाल देंगे? इस शादी के होने से लड़का सुखी रहेगा।" प्रसूनांबा ने कहा।

"लड़के की बात चाहे जो हो, तुम एक नहीं, चार करधनियां बनवा सकती हो!" रामप्रसाद ने मजाक किया।

दूसरे दिन जागते ही प्रसूनांबा एक दम रो पड़ी। उसके गहनों की पेटी तोड़ी गई थी। उसमें एक भी गहना बचा न था। उस बूढ़े का भी कहीं पता न था।

"प्यार करनेवाले दो व्यक्तियों को तुमने फोड़ना चाहा जिसका अच्छा फल तुम्हें मिल गया है।" रामप्रसाद ने कहा।

थोड़ी देर बाद अनंत ने लौटकर कहा- "रूपा का पिता दहेज़ तो न दे सकेगा, मगर उसकी पत्नी की करधनी जरूर देगा।"

अपने गहने खोकर प्रसूनांबा दुखी थी। पर करधनी की बात कानों में पड़ते ही उसके प्राण उछल पड़े और उस शादी के लिए वह राजी हो गई।

विवाह के समय प्रसूनांबा को लगा कि उसने रूपा के पिता को कहीं देख लिया है। लेकिन यह बात उससे छिपी ही रही कि अनंत, रामप्रसाद और रूपा के पिता ने मिलकर किराये की गाड़ी, उधार के वस्त्र, सोने का मुलम्मे चढ़ाई गई अगूठियों के साथ नाटक रचा है और उसी के गहनों को गलवाकर करधनी बनवा ली है।

चाहे जो हो, पर करधनी पहनने की अनेक सालों की उसकी इच्छा की पूर्ति यों हो गई।

योग्य बहू

गौरी विधवा थी। उसके पास थोड़ी-बहुत संपत्ति थी, पर अव्वल दर्जे की कंजूस थी। उसका बेटा राधारमण नौकरी करते थोड़ा-बहुत कमाता भी था। फिर भी गौरी बड़े, पापड वगैरह बनाकर बेचा करती। जो कुछ पैसे प्राप्त होते, उन्हें तिजोरी में सुरक्षित रखती थी। छुट्टे पैसे जो मिलते, खाली दियासलाई के डिब्बों में भरकर रख लेती।

राधारमण देखने में सुंदर था, साथ ही वह मातृभक्त था। गौरी ने अभी तक उसका विवाह न किया था।

अड़ोस-पड़ोस की गृहणियाँ अकसर कहा करतीं–"गौरी, तुम्हारे पास धन-दौलत की कमी नहीं, और कितने दिन तुम इस तरह कष्ट भोगती रहोगी? राधारमण का विवाह करके बहू के आने पर सुख क्यों नहीं भोगती?"

"करना तो चाहती हूँ, पर योग्य बहू तो मिले?" गौरी जवाब देती। उसकी दृष्टि में योग्य बहू का मतलब अपने बेटे से भी अधिक असमर्थ बहू।

एक दिन उसने शादियाँ रचनेवाले पंडितजी को बुलवाकर कहा–"पंडितजी, कोई ऐसा रिश्ता लाओ। लड़की सुंदर हो, भारी दहेज़ मिले और बहू मेरे हाथ का खिलौना बनकर रहे!"

"अच्छी बात है! मैं अभी धूप से होकर आ रहा हूँ। पीने को कोई ठण्डी चीज़ दे दो। फिर आराम से रिश्ते की बात करेंगे।" पंडित ने पूछा।

पंडितजी ने सोचा कि गौरी ठण्डी शरबत या मट्ठा पिलायेगी। मगर वह एक गिलास पानी ले आ पहुँची।

"तब तो मुझे थोड़ी दक्षिणा दिला दो!" पंडित ने पूछा।

शिवकुमार तिवारी

"क्या कहा? दक्षिणा चाहिए? हूँ, तब तो इसी रास्ते से सीधे चलते बनो।" गौरी ने पंडित को पिछवाड़े का रास्ता दिखाया।

थोड़े दिन बीत गये। एक दिन पंडित एक रिश्ता लेकर आ पहुँचा। कन्या गौरी को पसंद आ गई। राधारमण की शादी हो गई।

अड़ोस-पड़ोस की महिलाएँ नई बहू को देखने आईं। उसी वक़्त पंडित दक्षिणा लेने आ धमका। सबके सामने अपना बड़प्पन दिखाने के ख्याल से गौरी अपनी बहू से बोली–"बेटी! पंडितजी को मिठाइयों के साथ तांबूल में बीस-पच्चीस रुपये दे दो।"

बहू भीतर चली गई। बड़ी थाली में पच्चीस लड्डू, पच्चीस जलेबियाँ तथा मिठाइयों के साथ तांबूल में सौ रुपयों का बण्डल ले आई और पंडित के हाथ दिया। पंडित ने उन सारी चीज़ों को अपने अंगोछे में बाँध लिया और प्रसन्न मुद्रा में कहा–"गौरी! हीरे जैसी बहू! तुम्हारे योग्य बहू मिल गई है!" ये शब्द कहकर पंडित चला गया।

उन चीज़ों को देखते ही गौरी का कलेजा बैठ गया। मगर वह चाहते हुए भी सब लोगों के सामने कुछ कह न पाई। सब के जाने पर बहू को बुलवाकर बोली–"बेटी! मैंने यूँ ही कहा तो तुम सचमुच ले आई! आइंदा ऐसा करो, मैं जितने लाने को कहूँगी, तुम उसमें से आधा ही लाओ; समझी।"

थोड़े दिन बाद गौरी का समधी अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ बेटी को देखने आया। सब लोग खाने बैठे, गौरी भी उसी पंक्ति में बैठ गई। बहू खाना परोस रही थी।

"बेटी, मुझे भी खाना परोस दो। मैं भी इन लोगों के साथ खाना खाऊँगी।" गौरी ने बहू से कहा।

बहू ने सब को खाना परोसा और अंत में सास के पत्तल में थोड़े से दाने छिड़क दिये।

"बहू, यह तुम क्या करती हो? मैंने चावल परोसने को कहा था न? तुमने दाने छिड़क दिये?" गौरी ने पूछा।

"मांजी, तुमने ही तो कहा था, तुम जो कहोगी, उसमें से आधा ही डाल दूं!" बहू ने कहा।

सबके सामने गौरी का अपमान हुआ, साथ ही क्रोध भी आ गया। मगर वह चुप रह गई। पंक्ति में बैठे रिश्तेदारों ने समझाया–"गौरी! तुम घर-गृहस्थी का बोझ और कितने दिन उठाओगी। तुम सारी जिम्मेदारी अपनी बहू के हाथ सौंपकर राम नाम जपा करो।"

"हां, हां, आप लोगों का कहना सही है।" यों कहते गौरी ने चाभियों का गुच्छा बहू के हाथ सौंप दी। गौरी की इस विवेकशीलता पर सब लोगों ने उसकी तारीफ़ की। सबके चले जाने पर गौरी ने बहू से चाभियों का गुच्छा मांगा।

"मांजी! तुमने तो घर की जिम्मेदारी मुझे सौंप दी है न?" बहू ने पूछा।

"यूं ही कह दिया तो तुम सच मान बैठी?" यों कहते गौरी ने चाभियों का गुच्छा वापस ले लिया।

बहू को गुस्सा आ गया, पर वह मौन रह गई।

गौरी के घर के सामने इमली के पेड़ थे। ठण्डी हवा पाने के ख़्याल से गौरी रात को उन पेड़ों के नीचे सोया करती थी। एक दिन आधी रात के वक़्त पेड़ों

पर से कोई पिशाच आया, गौरी का गला दबाते हुए पूछा–"चाभियों का गुच्छा दोगी या मार डालूं?"

गौरी चिल्ला उठी, पर कोई फ़ायदा न रहा। गौरी चाभियों का गुच्छा पिशाच के हाथ देकर घर के भीतर दौड़ आई।

इतने में पिछवाड़े की ओर से अन्दर आकर बहू ने पूछा–"माँजी, यह तुम क्यों चिल्ला रही हो? कहीं पिशाच ने तो पकड़ नहीं लिया?"

गौरी पसीना पसीना हो गई थी। वह थर-थर कांप रही थी। पर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"ओह! पिशाच के आवेश होने पर ऐसे ही लक्षण होते हैं।" यों कहते बहू सास को झाड़ू से मारने लगी।

"अरी, मुझ में पिशाच का आवेश नहीं हुआ है री!" गौरी रोने-कलपने लगी।

"क्यों नहीं? तुम्हें तो धन के पिशाच ने पकड़ लिया है?" बहू ने कहा।

दूसरे दिन बहू गरीबों में अन्न और वस्त्र बांट रही थी, इसे देख गौरी ने पूछा–"बहू, तुम्हारे पास इतना सारा धन कहाँ से आ गया?"

"कहाँ से क्या? लो, देखो, चाभियों का गुच्छा! इमली के पेड़ पर की पिशाचिनी ने इसे मेरे हाथ दे दिया है।" बहू ने जवाब दिया।

"उस पिशाचिनी को तुम कैसे जानती हो?" गौरी ने पूछा।

"वह कोई पराई थोड़ी ही है। मेरी चचेरी बहन है।" बहू ने उत्तर दिया।

ये शब्द सुनकर गौरी डर गई और चुप रह गई। उस दिन से वह बहू की हर बात मानने लगी। उसका डर था कि उसकी बहू की बात न मानने पर वह उसे मार डालेगी।

राधारमण को जब यह मालूम हुआ कि उसकी माता के इस परिवर्तन का कारण उसकी पत्नी ही है, वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

बुद्धिमति गृहिणी

एक गाँव में कालूराम नामक एक मुंशी था। वह अपने गाँव के जमीन्दार के यहाँ मुँशीगिरी करता था। साधारणतः धनियों के यहाँ काम करनेवाले मुँशी रुपये बना लेते हैं। मगर कालूराम ऐसा आदमी न था। वह ईमानदार था उसे जो तनख्वाह मिलती थी, वह उसके परिवार के लिए काफ़ी न थी। उसकी औरत होशियार और बुद्धिमति थी। इसलिए उन्हीं पैसों से वह अपनी गृहस्थी चला लेती थी। गाँव के लोगों का विश्वास था कि कालूराम ने काफ़ी धन जोड़ रखा है।

इसी ख्याल से एक दिन रात को एक नामी चोर कालूराम के घर में घुस आया। वह दिन के वक़्त बड़ा बुजुर्ग माना जाता था, पर रात के वक़्त चोरियाँ करके पेट पालता था।

चोर ने कालूराम के घर की पूरी तलाशी ली, पर साधा ण चीज़ों को छोड़ उसे गहने व रुपये-पैसे कहीं दिखाई न दिये। इसलिए चोर के मन में यह शंका हुई कि कालूराम ने अपनी संपत्ति कहीं छिपा रखी है। उसने छुरी हाथ में लकर कालूराम के कमरे में प्रवेश किया।

आहट पाकर पति-पत्नी जाग पड़े। मुँह पर काली नक़ाब ओढ़े दबे पाँव अपनी ओर चोर को बढ़ते देख वे दोनों डर के मारे कांप उठे।

"मैंने सारा घर छान डाला, पर कुछ हाथ न लगा। धन और गहने तुम लोगों ने कहाँ छिपा रखा है? नहीं बताओगे तो तुम्हारी छाती में छुरी भोंक दूंगा।" चोर ने कालूराम की छाती पर छुरी टिका कर धमकी दी।

धर्मेन्द्र त्यागी

"मैं गरीब हूँ। भला मेरे पास क्या हो सकता है? घर में जो कुछ तुम्हें दिखाई दे, लेते जाओ और हम को प्राणों के साथ छोड़ दो।" कालूराम ने हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाया।

चोर ने उसकी बातों पर यक़ीन नहीं किया, वह कालूराम को बुरी तरह से पीटने लगा। इस पर कालूराम की पत्नी उन दोनों के बीच आ खड़ी हुई और अपने पति से बोली–"तुम भी क्यों नाहक़ जान देते हो? इसको दक्षिणी कमरे में ले जाकर जो कुछ हमने छिपा रखा है, सारा दे दो।"

कालूराम ने अपनी औरत की चाल भांप ली और उसने उसकी बात मान ली। तब चोर को साथ ले दक्षिणी कमरे में पहुँचा, तभी उसकी पत्नी ने उस पर कमरे के किवाड़ बंद करके बाहर से कुंडी चढ़ा दी।

चोर चकित रह गया। खिड़की के पास आकर बोला–"यह क्या? तुमने किवाड़ क्यों बंद किये?"

कालूराम की औरत ने हँस कर कहा–"हमारे पास धन ही कहाँ है, बेटा? तुम को सिपाहियों के हाथ सौंपने के लिए ही हमें यह काम करना पड़ा।"

चोर थरथर कांपते हुए बोला–"माई, तुम्हारा पुत्र होगा, यह काम मत करो।"

कालूराम की पत्नी थोड़ी देर तक सोचती रही। तब बोली–"अच्छी बात है। तुम मिन्नत करते हो, इसलिए छो़

देती हूँ। मगर इस बात की क्या गैरंटी है कि तुम बाहर आने पर हमें छुरी से धमकाओगे नहीं? पहले तुम उस छुरी को खिड़की में से बाहर फेंक दो।"

चोर ने दूसरे ही क्षण अपने हाथ की छुरी खिड़की में से बाहर फेंक दी। तब उस औरत ने अपने पति से कहा—"तुम देखते क्या हो? उसने तुमको पीटा था न? ब्याज सहित उसे चुका दो।"

वास्तव में कालूराम चोर से ज्यादा बलवान था। उसके हाथ में इस वक़्त छुरी न थी, इसलिए कालूराम ने चोर को पीट-पीटकर चटनी कर दी।

चोर ने रोते हुए हाथ जोड़कर कहा—"माई, अब तो मुझे छोड़ दो। जिंदगी-भर फिर कभी तुम्हारे घर की ओर न ताकूँगा।"

"बेटा, इतनी जल्दी तुम्हें कैसे छोड़ दूँ? हमारी तनख़्वाह काफ़ी नहीं पड़ती। चार महीने का घर का किराया बाक़ी है। इस महीने के अंत तक घर के मालिक को सौ रुपये न देंगे तो हम को घर से निकाल देगा।" कालूराम की पत्नी ने कहा।

"सौ रुपये मैं चुका दूँगा।" चोर ने कहा।

"बात तो सही है, पर हमारे ऋणदाताओं को यह मालूम हो जाय कि हमारे हाथ सौ रुपये आ गये, वे थोड़े ही चुप रहेंगे? दूकान में सौ रुपये चुकाने
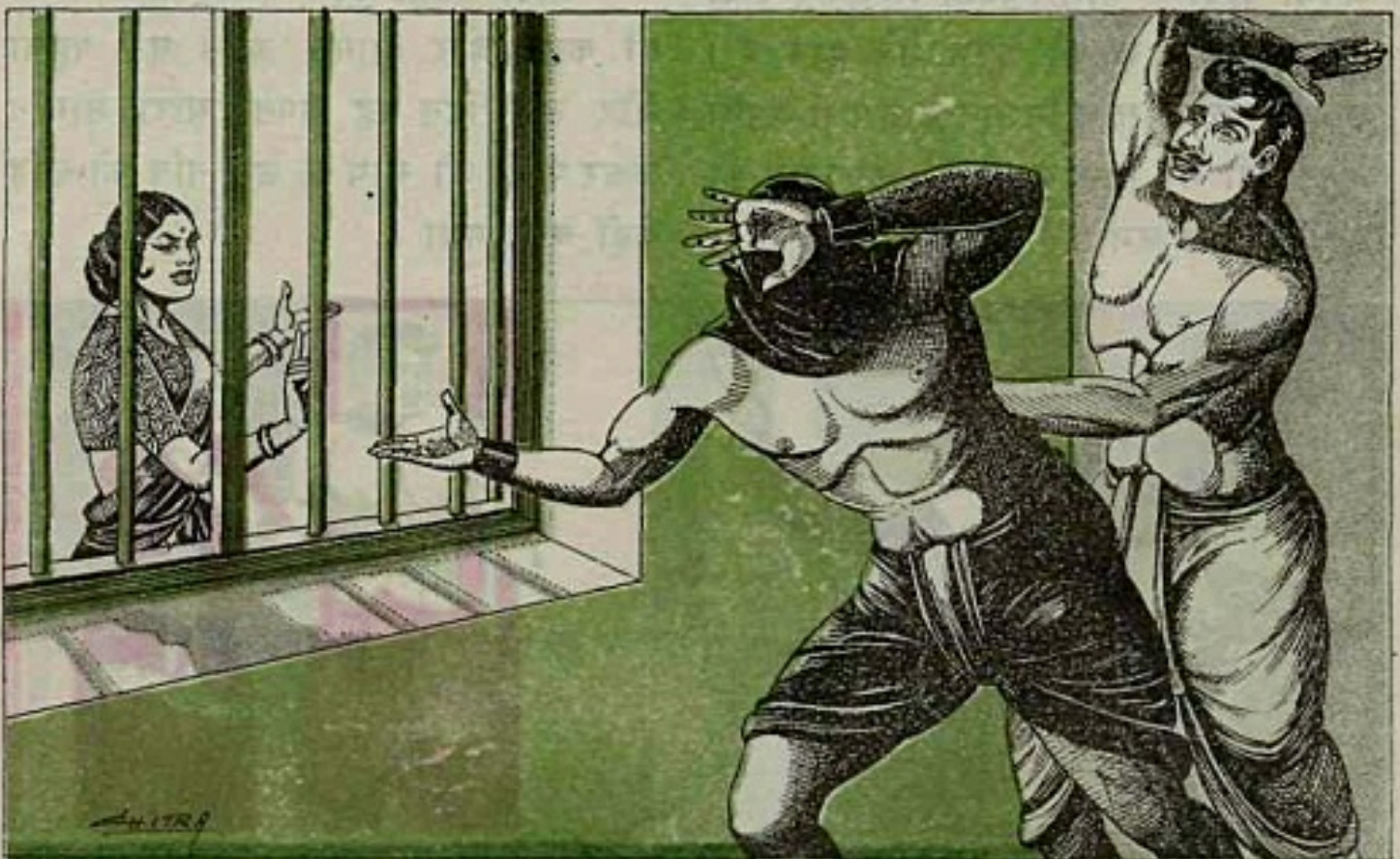
हैं, दूधवाले को सौ रुपये देने हैं। ये सारे कर्ज चुकाने हैं न बेटा?" कालूमाम की पत्नी ने कहा।

"माई, बाक़ी दो सौ मैं दे दूंगा। अब तो मुझे छोड़ दो।" चोर ने मिन्नत की।

"इतनी जल्दी कैसे छोड़ दूं? अगली संक्रांति के दिन मेरी बेटी और दामाद आनेवाले हैं। पक्वान्न बनाने हैं, उनको कपड़े-लत्ते देने हैं। कम से कम तीन सौ तो खर्च होंगे। इसका तुम क्या जवाब दोगे?" कालूराम की पत्नी ने पूछा।

"माई, तुम्हारे पैर पड़ता हूँ। सारा खर्च मैं उठा लूंगा। मुझे छोड़ दो।" चोर ने प्रार्थना की।

"तुम बार-बार मिन्नत कर रहे हो, इसलिए तुम को छोड़ दूंगी। लेकिन तुम अपनी पत्नी के नाम चिट्ठी लिखकर दे दो कि वह कुल छे सौ रुपये मेरे हाथ दे। उस चिट्ठी के साथ निशाने के रूप में अपनी अंगूठी भी मेरे हाथ दे दो।" कालूराम की पत्नी ने शर्त लगाई।

उसकी शर्त के अनुसार चोर ने चिट्ठी लिखकर अंगूठी भी कालूराम की पत्नी के हाथ दे दी। इस पर उस औरत ने पूछा—"तब तो बेटा, मैं तुम्हारे घर का पता नहीं जानती हूँ न?"

चोर ने लाचार होकर अपने घर का हुलिया बताया। तब सवेरा होने को था। कालूराम की पत्नी चोर के घर पहुँची। चोर की औरत को चिट्ठी व अंगूठी दिखाकर छे सौ रुपये ले आई।

घर पहुँच कर उस औरत ने कमरे के किवाड़ खोल दिये। चोर बेतहाशा बाहर आया। उसे जाते देख कालूराम की पत्नी ने पूछा—"बेटा, तुम फिर कब आओगे?"

"माई, छे सौ रुपये कमाने के बाद।" यों कहते चोर भागते अपने घर पहुँचा और उसी दिन वह अपना सारा सामान लेकर पत्नी को साथ ले उस गाँव को छोड़ कहीं चला गया।
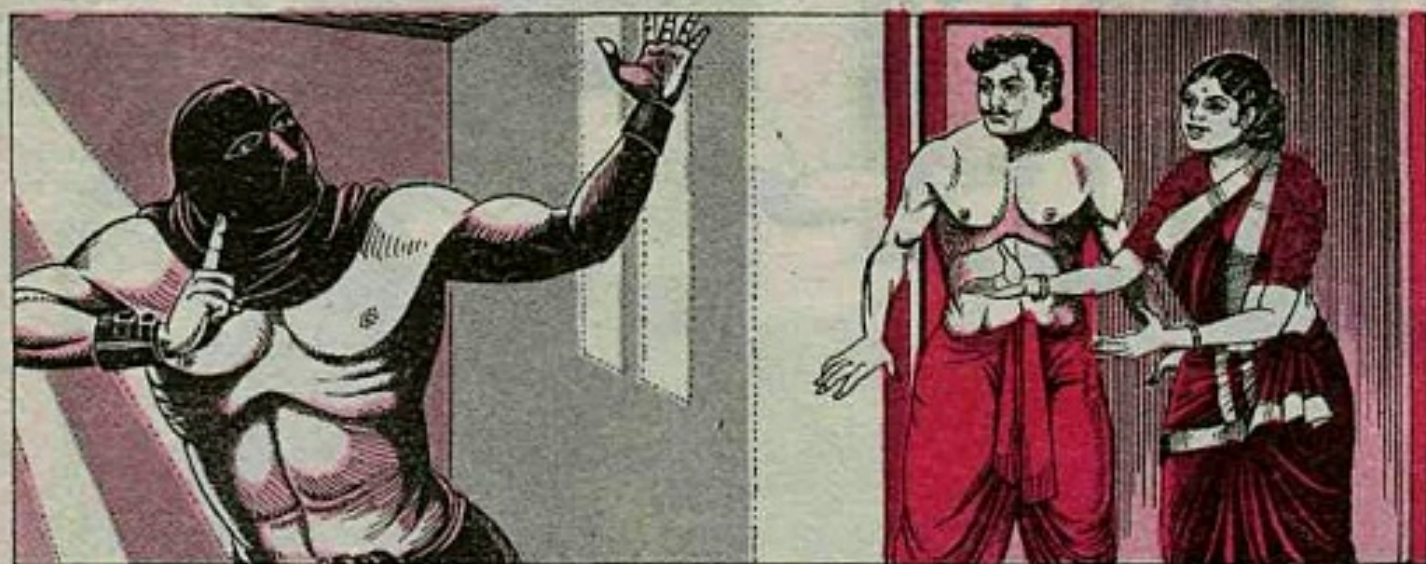
वानर वीरों ने इस बीच राक्षसों का प्रधान मंत्री प्रहस्त का सामना किया। इस बार के युद्ध में वानर और राक्षस वीर अधिक संख्या में मरे। प्रहस्त के चारों मंत्री क्रोध में आकर वानरों का बुरी तरह से वध करने लगे। इस पर द्विविद नामक वानर वीर ने कुपित हो एक पहाड़ी शिला फेंककर नरांतक का वध किया। इसी प्रकार क्रमशः दुर्मुख नामक वानर वीर ने समुन्नत का, जांबवान ने महानाद का और तार ने कुंभहृन का वध किया। इस प्रकार प्रहम्त के चारों मंत्री एक साथ मारे डाले गये।

अपने मंत्रियों के वध को स्वयं देख प्रहस्त क्रोध से पागल हो उठा। उसने अंधाधुंध वानरों का वध करना शुरू किया। तब नील ने प्रहस्त का सामना किया। प्रहस्त ने बाणों के साथ तथा नील ने पेड़ों के साथ युद्ध किया। नील के शरीर को प्रहस्त के बाण छेदने लगे, फिर भी उसकी परवाह किये बिना नील ने प्रहस्त के रथ के घोड़ों को मार डाला और उसके धनुष को खींचकर तोड़ दिया। अंत में प्रहस्त और नील मल्लयुद्ध करने लगे। उस युद्ध में नील ने प्रहस्त के सिर को एक शिला से फोड़ डाला। इस पर राक्षसों के पैर उखड़ गये और वे रोते हुए लंका की ओर भाग गये।

राक्षसों ने जाकर रावण को प्रहस्त की मृत्यु का समाचार सुनाया। रावण का

२५. कुंभकर्ण जाग उठा

और महोदर भी थे। साथ ही पिशाच, त्रिशुर, कुंभ और निकुंभ भी उनमें शामिल थे।

रामचन्द्रजी रावण का तेज देख विस्मय में आ गये। उन्हें लगा कि ऐसा तेज देवता और दानवों में किसी का न होगा। फिर भी रावण अब उनके सामने आ गया था।

इस बात का रामचन्द्रजी को बड़ा आनंद हुआ। सीताजी का वह अपहरण कर चुका है, अब उसका बदला लिया जा सकता है। इस वास्ते रामचन्द्रजी लक्ष्मण को साथ लेकर रावण के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो गये।

क्रोध भड़क उठा। उसने स्वयं युद्ध भूमि में जाने का निश्चय किया। उत्तम घोड़ों से जुते रथ पर सवार हो युद्धक्षेत्र की ओर निकल पड़ा।

नगर को पार करने पर रावण ने देखा, पेड़ और शिलाओं को लिए वानर सेना खड़ी हुई है। रावण को युद्ध क्षेत्र में प्रवेश करते देख रामचन्द्रजी ने विभीषण से पूछा—"उस महासेना में तरह तरह की ध्वजाओं के साथ सबसे आगे आनेवाला व्यक्ति कौन है?"

विभीषण ने रामचन्द्रजी को प्रत्येक व्यक्ति का परिचय दिया। उनमें रावण के पुत्र अकंपन और मेघनाद भी थे। अतिकाय

वानर सेना को कंपाते हुए प्रवेश करनेवाले रावण का सुग्रीव ने डटकर सामना किया। रावण ने एक ही बाण के द्वारा सुग्रीव को बेहोश कर दिया। राक्षस सिंहनाद कर उठे। सर्वत्र कोलाहल मच गया।

इसे देख गवाक्ष, गवय, ऋषभ, ज्योतिर्मुख, तथा नभ नामक वानर वीरों ने अपने शरीर बढ़ाये और पहाड़ी शिलाएँ लेकर रावण पर टूट पड़े। रावण ने सब पर बाणों का प्रयोग किया। इस पर वानर वीर घबरा गये और रामचन्द्रजी की शरण में गये।

रावण के द्वारा वानर सेना के निर्मूल होते देख रामचन्द्रजी वानरों की रक्षा करने निकल पड़े। इसे देख लक्ष्मण ने रामचन्द्रजी से प्रार्थना की कि रावण को मारने का उसे मौक़ा दिया जाय! लक्ष्मण को सावधान रहने की चेतावनी दे रामचन्द्र ने उसे अनुमति दी।

इस पर लक्ष्मण ने रावण का सामना किया। इसे देख हनुमान पहले ही रावण के सामने जा पहुँचा, अपना दायें हाथ उठाकर बोला–"तुमने देव, दानव, गंधर्व, यक्ष तथा राक्षसों को हराया है। यह बात सच है! मगर तुम यह भूल मत जाओ कि तुम्हें वानरों के द्वारा खतरा है। मैं अपने इन हाथों से तुम्हारा वध करने जा रहा हूँ।"

इस बात पर नाराज़ हो रावण बोला–"हे हनुमान! तुम निर्भयतापूर्वक मुझ पर प्रहार करो। तुम्हें यह शाश्वत यश प्राप्त होगा कि एक बंदर ने महान वीर राक्षस-राज रावण को पीटा है। इसके बाद में तुम को मार डालूँगा।"

"रावण! तुम इस बात का स्मरण करो कि तुम्हारा पुत्र अक्ष मेरे प्रहार से मर गया है।" हनुमान ने कहा।

इसके बाद रावण ने हनुमान की छाती पर प्रहार किया। हनुमान विचलित हो क्रोध में आया और रावण की छाती पर ज़ोर से अपनी हथेली से दे मारा। इस पर रावण इस प्रकार झूम उठा जैसे भूकंप के कारण पर्वत हिल जाता है। इसे देख सारे वानर उत्साह में आ गये और कोलाहल कर उठे।

रावण ने हनुमान के पराक्रम की प्रशंसा की, पर हनुमान ने कहा–"हे रावण! मेरे पराक्रम का मूल्य ही क्या रहा? मेरे प्रहार के बाद भी तुम ज़िंदा हो! तुम एक बार और मुझ पर वार करो, तब मैं अपनी मुट्ठी के प्रहार से तुम को यमलोक में भेज दूंगा।"

क्रोध में आकर रावण ने हनुमान की छाती पर मुक्का मारा। उस चोट को

खाकर हनुमान का सिर चकरा गया। हनुमान संभलकर रावण पर वार करने ही वाला था कि इस बीच रावण नील से लड़ने चला गया।

वानर सेनापति नील रावण के बाणों की चोट खाकर कुपित हो उठा और उस पर एक पर्वत शिखर फेंक दिया। इस बीच हनुमान संभलकर रावण के पास आकर बोला–"तुम मेरे साथ युद्ध करना छोड़ दूसरे के साथ युद्ध कर रहे हो, इसलिए बच गये।"

रावण ने बाणों के द्वारा पर्वत शिखर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। इसके बाद उसने नील पर आग्नेयास्त्र चलाकर उसे बेहोश कर दिया और तब लक्ष्मण पर हमला कर बैठा।

लक्ष्मण ने कहा–"हे राक्षसराज! तुम इन वानरों के साथ क्यों युद्ध करते हो? मेरे साथ लड़ो।"

"लक्ष्मण! तुम्हारी मौत निकट आ गई है। इसलिए तुम मेरे सामने आ गये। मैं अभी तुम को यमपुरी में भेज देता हूं।" रावण ने डींग मारी।

"हे पापी रावण! तुम अपनी आत्मस्तुति न करो। यह एक वीर के लिए शोभा नहीं देता! मैं तुम्हारी शक्ति व पराक्रम को अच्छी तरह से जानता हूं। मैं युद्ध के लिए सन्नद्ध हूँ। इसलिए बकवास बंद करो।" लक्ष्मण ने कहा।

रावण ने कुपित होकर लक्ष्मण पर बाणों का प्रहार किया। लक्ष्मण ने बीच में ही उन बाणों को काट डाला। दोनों परस्पर बाण-वर्षा करने लगे। इस बीच रावण के बाणों के प्रहार से लक्ष्मण बेहोश हो गया। इसे देख रावण प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ा और लक्ष्मण को ऊपर उठाने को हुआ। तभी हनुमान ने प्रवेश करके रावण के वक्ष पर मुक्के का प्रहार किया। इस पर रावण औंधे मुँह गिर पड़ा और उसके मुँह, आँख और कानों से खून बहने लगा।

मौक़ा देख हनुमान बेहोश हुए लक्ष्मण को रामचन्द्रजी के पास उठा ले गया।

थोड़ी देर में लक्ष्मण तथा रावण भी होश में आ गये। रावण पुनः युद्ध के लिए सन्नद्ध हो उठा।

इस बार रामचन्द्रजी ने रावण पर आक्रमण किया। इसे देख हनुमान ने कहा–"रामचन्द्रजी! रावण के साथ युद्ध करने के लिए आप मेरे कंधों पर सवार हो जाइए।"

रामचन्द्रजी ने ऐसा ही किया। वह हनुमान के कंधों पर सवार हो रथ पर सवार रावण के साथ युद्ध करने चले गये।

रावण ने रामचन्द्रजी के वाहन बने हनुमान पर श्रेष्ठ बाणों का प्रयोग किया। उन बाणों की चोट खाने पर हनुमान का तेज और दमक उठा। पर रामचन्द्रजी रोष में आ गये। उन्होंने रावण के रथ के पहियों, घोड़ों ध्वजा को, छत्र, सारथी तथा हथियारों पर भी बाण चलाया और रावण के वक्ष में बाण गड़ा दिया। उस चोट को सहन न कर सकने के कारण रावण अपने हाथ के धनुष को खिसकाकर बेहोश हो गया।

इसके बाद रामचन्द्रजी ने एक अर्द्ध चंद्राकृतिवाले बाण से रावण का किरीट तोड़ डाला, तब रावण से बोले–"तुम अनेक वीरों का वध करके थक गये हो! मैं इस वक़्त तुम को नहीं मारूँगा। तुम जाकर विश्राम करो, फिर से युद्ध की तैयारी करके लड़ने आने के लिए मैं तुम्हें अनुमति देता हूँ, जाओ।"

रावण को ऐसी बातें सुननी पड़ीं, इस पर रावण शर्मिंदा हुआ और लाचार होकर लंका के भीतर चला गया। तब राम और लक्ष्मण ने युद्ध में घायल हुए वानरों की सेवा की।

लंका में लौटने पर रावण रामचन्द्रजी के बाणों का स्मरण करके डर गया और अपने अनुचरों से बोला–"इंद्र की समता कर सकनेवाला मैं एक साधारण मानव के

हाथों में हार गया। मेरी सारी तपस्या व्यर्थ हो गई। ब्रह्मा ने कहा था कि एक मानव के द्वारा मेरे प्राणों के लिए खतरा है। अब उनका वचन सत्य हो गया। मैंने ब्रह्मा से इस बात का वर न माँगा कि मानव के द्वारा मेरी मृत्यु न हो! हे राक्षसो, इस कारण तुम लोगों को और सावधानी के साथ शत्रु का संहार करना होगा! नगर की रक्षा करनी होगी। तुम लोग अभी जाकर कुंभकर्ण को निद्रा से जगा दो।"

कुंभकर्ण युद्ध के प्रारंभ होने के नौ दिन पूर्व ही सो गया था। रावण का विश्वास था कि वह निद्रा से जागकर युद्ध क्षेत्र में जाएगा और राम-लक्ष्मण का वध कर डालेगा। क्योंकि कुंभकर्ण के लिए किसी के शाप न थे।

रावण का आदेश पाकर राक्षस चन्दन, फूल मालाएँ, खाने के पदार्थ लेकर कुंभकर्ण के घर चले गये। कुंभकर्ण का घर बहुत ही बड़ा था। राक्षसों को भीतर पहुँचना बहुत कठिन प्रतीत हुआ। क्योंकि जब भी कुंभकर्ण सांस छोड़ता तब वह इतनी तेज़ चलती कि वह वायु राक्षसों को पीछे की ओर ढकेल देती।

कुंभकर्ण एक पर्वत की भांति लेटे गाढ़ निद्रा में निमग्न था। उसको जगाना असंभव था। फिर भी उसे जगाने के लिए राक्षस तैयार हुए और सर्व प्रथम उसके सामने माँस का ढेर लगाया। शराब के बर्तन रखे। उसके शरीर पर चंदन का लेप किया। फूल मालाओं से उसका शरीर ढक दिया। फिर शंख बजाये। जोर से चिल्लाया, उसे पीटा, हिलाया, डुला दिया, भेरियाँ बजाईं, फिर भी कुंभकर्ण जागा नहीं।

इस पर खीझकर राक्षसों ने गदाओं और मूसलों से कुंभकर्ण को मारा। फिर भी कोई प्रयोजन सिद्ध न हुआ। तब राक्षसों ने उस पर घोड़ों, ऊँटों, गधाओं तथा हाथियों को हांक दिया।

आखिर कुंभकर्ण जाग पड़ा। जागते ही उसे भूख लगी। उसने अपने सामने स्थित खाने के ढेरों को खतम किया। हंडियों में स्थित मद्य का सेवन किया। तब राक्षसों की ओर देखकर पूछा–"तुम लोगों ने मुझे क्यों जगाया? रावण कुशल हैं न? अन्य प्रकार का हमें कोई डर नहीं है न?"

फिर भी कुंभकर्ण ने सोचा कि किसी प्रकार की विपदा के आने से ही राक्षसों ने उसे जगाया है।

रावण के मंत्री यूपाक्ष ने कुंभकर्ण के सवालों का यों उत्तर दिया–"हे कुंभकर्ण! हमें आज तक जिन देवता, दैत्य और दानवों के द्वारा कोई भय उत्पन्न नहीं हुआ, वह अब मानवों के द्वारा होने जा रहा है। पहाड़ जैसे भारी शरीरवाले वानरों ने लंका को घेर लिया है। सीताजी का अपहरण करने पर क्रुद्ध हो रामचन्द्रजी उत्पात मचा रहे हैं। इसके पूर्व एक वानर ने लंका को जलाकर अक्षकुमार का वध कर डाला था। इस समय रामचन्द्रजी ने युद्ध में रावण पर प्रहार किया और यह सोचकर उन्हें छोड़ दिया कि वे मर गये हैं। रावण को देवता, दैत्य और दानव कुछ बिगाड़ न पाये। अब वह काम रामचन्द्र कर रहे हैं।

अपने भाई के युद्ध में पराजित होने का समाचार सुनकर कुंभकर्ण क्रोध में आया और यूपाक्ष से बोला–"मैं अभी जाकर वानर सेना तथा राम-लक्ष्मण का वध कर डालूंगा, तब जाकर रावण के दर्शन कर लूंगा। वानरों के रक्त और मांस राक्षसों को खिलाकर मैं खुद राम-लक्ष्मण का रक्त पी जाऊँगा।"

क्रोध में पागल हो घमण्ड में आकर कुंभकर्ण जो बातें कह रहा था, उन्हें सुनकर महोदर ने हाथ जोड़कर कुंभकर्ण से कहा–"तुम पहले रावण के पास जाओ। उनकी बातें सावधानी से तुन लो। तब भला-बुरा सोचकर युद्ध में शत्रु पर विजय प्राप्त कर लो।"

मृत्यु के राज्य में साहसी बालक

वाजश्रव नामक एक प्रसिद्ध ऋषि ने एक बार एक महा यज्ञ का आयोजन किया। उसमें अनेक ऋषि और विद्वान भी उपस्थित थे।

यज्ञ कई दिनों तक चलता रहा। उस यज्ञ का यह विधान था कि यज्ञकर्ता के पास जो कुछ है, उसे आमंत्रित ब्राह्मणों तथा साधू-संतों में दान कर दे।

उस विधान के अनुसार वाजश्रव अपने अतिथियों के लिए उपयोगी अनेक वस्तुओं के साथ असंख्य गायों का दान कर रहे थे।

वाजश्रव का छोटा पुत्र नाचिकेत बड़े ही ध्यानपूर्वक इस सारे कार्यक्रम को देख रहा था। वह बड़ा दुखी हुआ। क्योंकि उसका पिता बूढ़ी और अनुपयोगी गायें दान दे रहा था। यद्यपि नाचिकेत छोटा था, फिर भी उसने भली-भाँति धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया था और वह जानता था कि उसके अनुसार ऐसे पवित्र समय में इस प्रकार का दान देना कदापि उचित नहीं है।

नाचिकेत ने सोचा कि ऐसे यज्ञ के अवसर पर वाजश्रव को चाहिए कि उसके अधीन जो कुछ संपत्ति है, उसके साथ अपने बच्चों को भी दान कर देना चाहिए। इसलिए उस बालक ने अपने मन में सोचा—"जो कोई भी मुझे दान के रूप में ग्रहण करेगा, मैं उसकी सेवा ईमानदारी से करूँगा, ताकि मेरे पिता के द्वारा किये गये अन्याय का प्रायश्चित्त हो सके।"

नाचिकेत का पिता उस वक़्त दान देने में अत्यंत व्यस्त था, फिर भी उसने अपने पिता के पास जाकर पूछा—"पिताजी, बताइये कि आप ने मुझे किसे दान कर दिया?" वाजश्रव ने सोचा कि उसका

प्रो. मनोजदास

पुत्र मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछ रहा है, इसलिए उसने कोई उत्तर नहीं दिया। लेकिन नाचिकेत ने जब उसी सवाल को दो बार दुहराया, तब वह क्रोध में आया और कड़ककर बोला–"मैंने तुम्हें यम. के हाथ दान कर दिया है।"

वाजश्रव के ये शब्द जिन लोगों ने सुने, वे सब चकित रह गये। यम तो मृत्यु का देवता है। उसके हाथ में अपने पुत्र को सौंपने का मतलब है कि अपने पुत्र की मौत की कामना करना है!

सर्वत्र निस्तब्धता छा गई; पर बालक नाचिकेत ने शांतिपूर्ण शब्दों में कहा–"पिताजी! आप अपने वचन के प्रति ईमानदार रहिए। मैं तुरंत अपने मालिक के पास जाना चाहता हूँ।"

तब तक वाजश्रव ने अपनी भूल को समझ लिया था, उसे अपने व्यवहार पर अत्यंत दुख हुआ; इस पर उसने बड़े ही प्रेम तथा पश्चात्ताप के साथ अपने पुत्र को समझाना चाहा कि उसने जो कुछ कहा, उसे वह भूल जाय।

लेकिन बुद्धिमान नाचिकेत ने अपना दृढ़ निर्णय कर लिया था, उसने कहा–"आप ने मुझे इस पवित्र अवसर पर मृत्यु के देवता के हाथों में सौंप दिया, इसलिए मुझे उनके पास जाना ही होगा। हम तो सत्यवादी हैं। इसलिए हम जो जिम्मेदारी लेते हैं, वह चाहे अच्छा हो या बुरा, उसका हमें पालन करना ही चाहिए।"

इसके बाद दृढ निश्चय वाला नाचिकेत अपने घर को छोड़ यम के राज्य की ओर चल पड़ा। वह एक तरुण ऋषि था। उसकी अत्मा के प्रकाश ने उसे मार्ग दिखाया।

जो राज्य उसके लिए बिल्कुल अपरिचित था, आखिर वह उसमें पहुंचा। लेकिन उस वक्त यमराज अपने घर पर न थे। कहीं बाहर गये हुए थे। वह युवा ऋषि तीन दिन तक मृत्यु देवता के घर के

सामने उनके लौटने तक बड़ी सहनशीलता के साथ प्रतीक्षा में खड़ा रहा। जब यमराज लौट आये और उन्होंने यह समाचार जान लिया कि युवा ऋषि तीन दिन से भूख, प्यास, विश्राम या निद्रा के बिना शिथिल हो उनके इंतज़ार में खड़ा हुआ है। इस पर उन्हें आश्चर्य एवं दुख भी हुआ। उन्होंने बड़े ही प्रेम के साथ नाचिकेत का स्वागत किया, उसे उचित आसन पर बिठा कर पूछा–"हे मेरे महान अतिथि! तुमने तीन दिन तक मेरी प्रतीक्षा की, इसके एवज में मैं तुम्हें तीन वर देता हूँ! बताओ, तुम क्या क्या वर चाहते हो जिससे तुम प्रसन्न हो सके।"

नाचिकेत यमराज के ये शब्द सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अपना निर्णय सुनाकर कहा–"हे मेरे विशिष्ट देवता! जब से मैंने घर छोड़ दिया है, तब से मेरे पिता मेरी याद में दुखी होंगे। कृपया उनके पास आप तत्काल अपने आशीर्वाद भेज दीजिए, जिससे वे प्रसन्न हो सके और उनमें यह आत्मविश्वास भर दीजिए कि जो कुछ होता है, वह कल्याणकारी ही होता है।"

नाचिकेत का अपने पिता के प्रति यह भक्तिभाव देख यमराज बहुत प्रसन्न हुए और बोले–"वत्स, चिंता न करो, ऐसा

ही होगा।" फिर उससे दूसरा वर माँगने को कहा।

"हे मेरे कृपालू देवता! पृथ्वी में मैंने मानव को नाना प्रकार की यातनाएँ भोगते हुए देखा है; परंतु देवता मानव की इन सब पीड़ाओं से मुक्त होकर सदा परमानंदित रहते हैं! क्या आप मनुष्य को देवत्व प्राप्त करने का वह रहस्य बताने की कृपा करेंगे?"

नाचिकेत की तेज बुद्धि को देख यमराज एकदम विस्मय में आ गये; परंतु तरुण ऋषि पर प्रसन्न हो उस रहस्यपूर्ण दैवी शक्ति को प्रकट करने के लिए वे बाध्य हुए। उन्होंने बताया–"मानव भी स्वयं

अनुशासित हो अपने को देवता के समान बना सकता है ।"

नाचिकेत ने यमराज को धन्यवाद दिया और अब वह अपना तीसरा वरदान माँगने को तैयार हो गया। उसने पूछा—"हे मेरे महान देवता! कृपया आप मृत्यु के रहस्य को समझाइए। मानव क्यों मरते हैं? मृत्यु के बाद हमारी आत्माएँ कहाँ जाती हैं? मृत्यु पर कैसे विजय प्राप्त की जा सकती है?"

यमराज ने कभी उस छोटे ऋषि के मुँह से ऐसे प्रश्नों की प्रतीक्षा नहीं की थी। एक ओर तो उन्होंने नाचिकेत की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की, परंतु दूसरी ओर वे संकोच में पड़ गये। क्योंकि वे इस रहस्य पूर्ण ज्ञान को निश्चय ही उस पर प्रकट करना नहीं चाहते थे।

यमराज ने समझाना शुरू किया—"प्रिय वत्स! तुम कोई अपने लिए उपयोगी वर माँगो तो कहीं अच्छा होगा! जैसे वैभवपूर्ण जीवन बिताने के लिए धन तथा बिना किसी प्रकार की शारीरिक यातनाओं के लंबी आयु इत्यादि माँग सकते हो न?"

"भगवान; नहीं, ऐसे वर मुझे नहीं चाहिए! आप ने मुझे एक और वरदान देने की बड़ी कृपा की, इसलिए उस वर के द्वारा मैं मृत्यु के रहस्य का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ।" नाचिकेत ने विनय पूर्वक निवेदन किया।

यमराज ने नाचिकेत के ध्यान को किसी दूसरे सवाल पूछने के लिए बंटने की पूरी कोशिश की, पर वे सफल न हुए। आखिर वे मृत्यु के रहस्य को प्रकट करने के लिए मान गये। नाचिकेत ने अंतरात्मा के रहस्य को जान लिया कि आत्मज्ञान के प्राप्त करने के कारण अमरत्व प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि वास्तव में आत्मा अमर है। इसके बाद नाचिकेत आत्मज्ञान को प्राप्त कर पृथ्वी पर लौट आया। वह उन साहसी बालकों में से एक है जिनके बारे में हम उपनिषदों में पढ़ते हैं। वह ज्ञात से अज्ञात को प्राप्त करने की जिज्ञासा का एक चिह्न है!
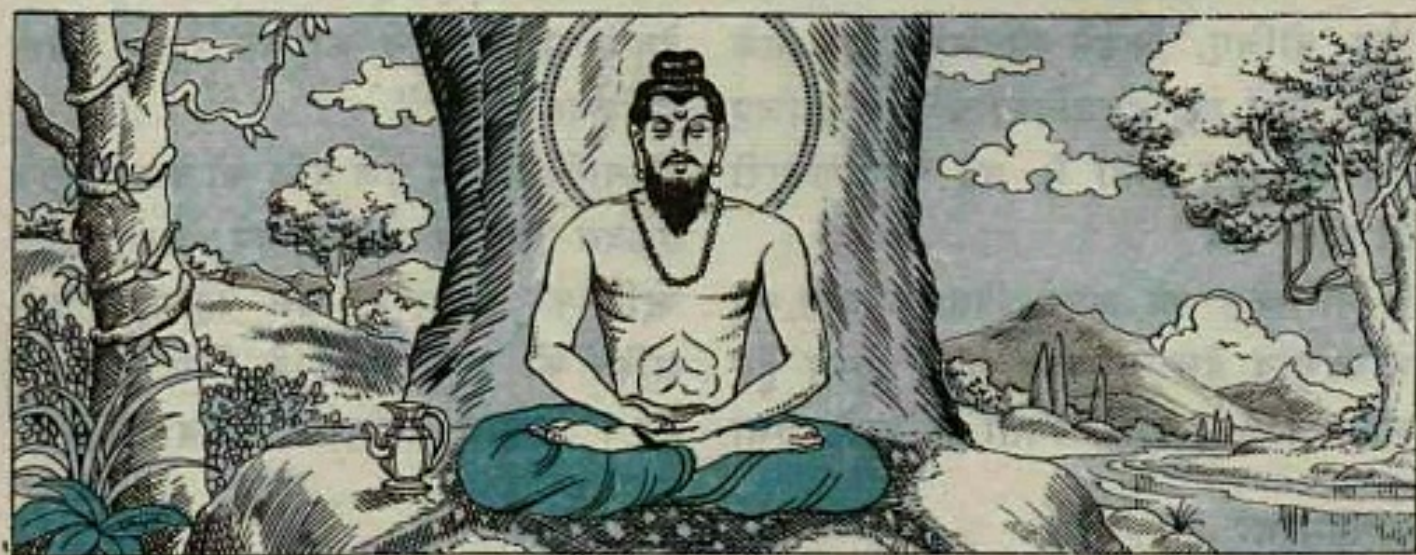
कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता

कहानी का सुंदर शीर्षक देकर रु. २५ जीतिए!

?

दो किसान अगल-बगल के खेतों में काम करते हुए दुपहर को घर जाने की फ़ुरसत न मिलने के कारण खेत पर ही खाना मँगवाकर खाया करते थे।

खाना खाते समय एक किसान को खांसी का दौर आया। दूसरे किसान ने उससे पूछा–"तुम खाँसते क्यों हो?"

"यह तो खाँसी नहीं, गले में कोई चीज अटक गई है। मेरी औरत मेरी याद करती है, इसीलिए ऐसा हुआ है।" पहले किसान ने जवाब दिया।

दूसरे किसान को इस बात पर बड़ा क्रोध आया कि उसकी पत्नी उसकी याद नहीं करती, इसीलिए उसके गले में कोई चीज अटक नहीं गई। उसने घर जाकर अपनी पत्नी को गालियाँ सुनाईं। पत्नी ने समझाया–"खाना खाते ही दुपहर को मैं सो गई। इसलिए तुम्हारी याद नहीं की। कल जरूर तुम्हारी याद करूँगी।"

दूसरे दिन उसने तरकारी में जरूरत से ज्यादा मिर्च डाल दिया। किसान ने ज्यों ही तरकारी मुँह में डाल दी, त्यों ही खांसना शुरू किया और बोला–"अरी पगली! तुम इतनी ज्यादा मेरी याद न करो।"

*   *   *

उपर्युक्त कहानी के लिए सोच-समझकर एक बढ़िया शीर्षक कार्ड पर लिखकर "कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता" चन्दामामा, २ & ३ आर्काट रोड़, मद्रास-६०००२६ के पते पर भेज दीजिए।

२० नवंबर तक कार्ड पहुँच जाना चाहिए। उसमें फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता के शीर्षक न भेजें। परिणाम जनवरी '७७ के चन्दामामा में प्रकाशित किए जायेंगे।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road. Madras 600 026; Controlling Editor: NAGI REDDI

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

बड़े जोर से चल रही है पढ़ाई
अपने राजू की!

खेलकूद और रक्षा
के लिए एक नई चीज़
टाइगर
ज़ोरो
टाइगर
ज़ोरो
आटोमेटिक रिवाल्वर
चमकीले क्रोम या
गन ब्लैक रंग में
५० गोलियाँ मुफ़्त
आकर्षक पैकिंग
व्यापार सम्बन्धी
जानकारी
के लिए
टाइगर हार्डवेयर एण्ड टूल्स लिमिटेड
मैरिस रोड, अलीगढ़, टेलीफोन ३७४२ - तार ANCHOR
आवश्यकतानुसार निशान लगाइए ✓
☐ कृपया मुझे ज़ोरो आटोमैटिक रिवाल्वर वी०पी० द्वारा भेज दीजिए। मैं पोस्टमैन को रु० ४५ दे दूंगा जिसमें पोस्टेज और पैकिंग भी शामिल है।
☐ कृपया ज़ोरो आटोमैटिक रिवाल्वर उपहार स्वरूप पैक करके मेरी बधाई सहित इस पते पर भेज दीजिए।
नाम
पता
(रु० ४५ की मनीआर्डर रसीद साथ भेजिए)
इस कूपन को भरकर इस पते पर भेजिए
टाइगर हार्डवेयर एण्ड टूल्स लि०
मैरिस रोड, अलीगढ़, यू०पी०
CM
Interads

बबलगम
के भरपूर बुलबुले
BUBBLE GUM
NP
NP
007
बबल गम एवं
डबल
बबल गम
बबलगम चबाओ
चाहे जितने बुलबुले बनाओ...
सर्व प्रथम बनानेवालों की ओरसे
हमेशा सर्वोत्तम
ISI
दि. नॅशनल प्रॉडक्टस्
बंगलोर ५६० ००६

मित्र-संप्राप्ति